

इंतज़ार

प्रतिक्षा गाँगुली
&
प्रतिभा सिंह



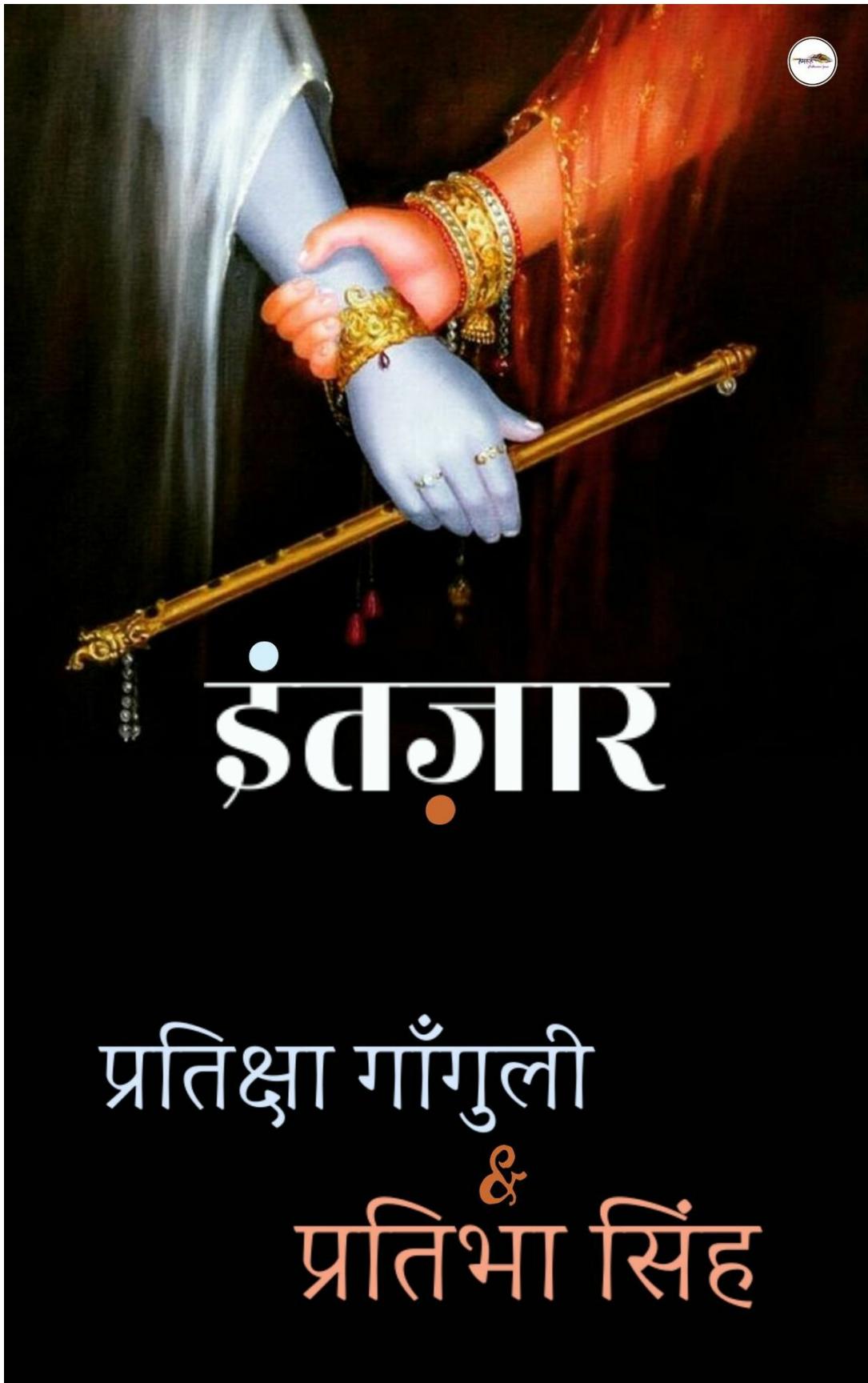
COLLECTION OF VARIOUS
→ HINDUISM SCRIPTURES
→ HINDU COMICS
→ AYURVEDA
→ MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with

By
Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server!]



JOIN TELEGRAM CHANNEL @EBOOKSIND



JOIN CHANNELS

.....

[HTTPS://T.ME/EBOOKSIND](https://t.me/ebooksind)

[HTTPS://T.ME/BOOKS_KHAZANA](https://t.me/books_kazana)

[HTTPS://T.ME/GUJARATIBOOKZ](https://t.me/gujaratibookz)

[HTTPS://T.ME/MARATHIBOOKZ](https://t.me/marathibookz)

JOIN TELEGRAM CHANNEL @EBOOKSIND

इंतज़ार

संकलक

प्रतिक्षा गाँगुली & प्रतिभा सिंह

Humrooh Publication House

Copyright, 2021, Pratiksha Ganguly & Pratibha Singh

इत्तजार

All rights reserved. No part of this book can be reproduced, stored or transmitted in any form without prior permission of the writer.

Genre: Open

1st edition

Edited by: Kishan Kushwaha

Instagram: unpublished_drafts

Cover by: Aakash Das

Instagram: aakash_das__

Catch us on different platforms as:

Email ID: humroohpublicationhouse@gmail.com

Instagram ID: humrooh_publication_house

Twitter ID: @humroohpublicationhouse

Facebook ID: @humroohpublicationhouse

Humrooh publication house is an impeccably soulful platform to immensify one's hidden writing talent before everyone. With a petaly effervescence, flowery team of Humrooh spreads it's fragrance by quantifying the talent of writers across the country, making a fruitful garden of sweet and young dream chasers. All the cherishing members who are indeed blessed writers create an aurafil environment to support writers to showcase their writing skills and help them in publishing them too though their love and support at a much affordable price.

Our Publication House published 100 plus books in just 6 months. Some of the anthologies of Our family are Maa, Bachpan, Vedna, Aatmik Prem, Ek Safar- An Unconditional Journey, 2020- Curse to the World, Khwahishen, Safar, Meri mitti, Bhartiya hai hum, Man mera, Vidya mata, Stree (hindi), Stree- A Warrior, Jazbaato ke Darmiyaan, Kasoor, Safar ka naam zindagi, Sintaprokhut- a field to reflect, Har har mahadev, Flying towards freedom, Ankahi Dastaan :- an untold tale, Zindagi as it's, Arshi, Peaceful Chaos, Kuch baate dil ki, Parchhai, Aaghaz, Apnapan- Ek ehaas, Trust- bat bharose ki, Akhiri Mohabbat, Moh Maya, Lonely Soul, Silent Screams, Muqammal Dastaan, Rainbow- the shade of love, The long silence, Memories- kuch yaadein kal ki, Mayanagri, Jazbaat, Housemaker, Mere jazbaat, Zikr Pyaar ka, Beshumaar Ishq, Ecstasy of our heart, Soch ek hathiyar, Desired Love, Book of Nature, Dread, Ibaadat, Aaradhya, Ishq, Dear Diary, Maa (2021), Jeevan Pathik, Dream, Betaab Zindagi, Kaash, The book of Nature, Paryavaran, Coronakaal, Tera Chehra, Pita, Khud se jung, Cancer, Betiyan Aur Dahej Ki Kashmakash, Kitni Mohabbat Hai, Adhura Ishq, Yoga, Asaan Lafzo Mein, Laal, Maa, Namami Gange, Humsafar, and so on.

Such family of artistically immersed fellas try their utmost to contribute in bringing the best word players before the world. Humrooh offers one of the most banging resourceful opportunities to each and every of that dream catcher who believes in what he writes. Just like a fruitful tree it lays down its delicious fruits in form of its team of writers to make every trespasser taste it.

ABHISHAR GANGULY

Founder Of Humrooh Publication House



Instagram id: @abhishar.ag

Twitter: @abhisharganguly

Facebook: @Abhishar Ganguly

Emerging with an unknown fate, Abhishar Ganguly took himself to an artistically, beautified journey and chose writing as both his passion and profession. His craft of writing has been scribbled in many of the banging ventures like Article of Inarticulate, Bhartiya Hai Hum, Ek Safar, Khwahishen, Safar, Bhartiya Hai Hum, School Days, Dreams, Free to fly, The Man In Me and so on and so forth.

Apart from this, he has contributed his words to an extravagant world record holder Anthology named Unity in diversity which signifies and illustrates the recognition of all the constitutional languages of India. Not so far till now, He has marshaled (compiled) various beautous anthologies such as Rang, Maa, Atmik Prem, Bachpan, Vedna, Meri Mitti, 2020, Man Mera Vidya Mata, Stree a warrior, Har Har Mahadev, Rang2, Jai Shree Ram, Khat, Silent Screams, Mazdoor, Maa2, Laal, Housemaker, Paryavaran, Coronakaal, Pita, Yoga: a healthy way of living, Adhura Ishq, Maahi, Doctors:Warriors, Kiss, Dosti: a selfless relationship, Kitaabein, Books, Yuva, Naagpanchami, Fauji, Buzurg, Rakhi, Vijeta, Soulmates and many more. He has compiled 46 anthologies and scribbled down in more than 86 anthologies.

He also runs various marvelous writing platforms and contests. One of them is truly praiseworthy Aarambh ek pratiyogita. These all golden steps by him are for the talented writers across the country who wants their talents to come and shine brightly as stars. His main motive behind opening his publication house is to provide gems of the writing culture, a dreamful recognition and dignified establishment as authors in a much affordable price and help them in enhancing their sunshine a bit more.

‘अस्वीकृति’

इस संकलन की सभी कविताएँ और कृतियाँ मूल रूप से लेखक के द्वारा उनकी सहमति से ली गई हैं तथा लेखक के द्वारा इसके प्राकृतिक और साहित्यिक होने की पुष्टि की गई है।

इन रचनाओं में लेखक ने अपनी कल्पना और साहित्यिक विचारों को रखा है, जिसका किसी भी जाति, समुदाय तथा किसी जीवित या मृत व्यक्ति से संबंध नहीं होना चाहिए। इसे मूल रखने के लिए हम सभी ने कड़ी मेहनत की है। अगर हमारे ज्ञान से कुछ छूट गया है, तो इसके लिए प्रकाशक, संकलनकर्ता और संपादक ज़िम्मेदार नहीं होंगे। लेखक पूरी तरह ज़िम्मेदार होंगे।

प्रकाशक

अभिशार गाँगुली

‘अभिस्वीकृति’

सबसे पहले मैं अपने ईश्वर का शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ उसके बाद मैं अपने माता-पिता अपने बड़ों का शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ। मैं अपने शरीर अपने दिमाग़ अपने हाथों अपनी सोच का भी शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ जिसके कारण आज मुझे सब जानते हैं।

जीवन में कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अपना रास्ता खुद बनाते हैं और आगे बढ़ते हैं जैसे मेरे भाई अभिशार गाँगुली, उसने जो अपने जीवन में किया है वो शायद इतना भी आसान नहीं था जितना अब दिखता है। वो कई बार टूटे, कई बार हारे, पर कभी रुके नहीं मैं शुक्रिया कहकर उनको छोटा नहीं करना चाहती पर कहना पड़ेगा ही, शुक्रिया भइया सबसे अलग सोचने के लिए शुक्रिया औरतों को समझने के लिए शुक्रिया उन सबके लिए जो तुम करते हो।

कभी सोचा ना था मेरे से कभी कुछ लिखा जाएगा पर आपके वजह से आज ये दूसरी एँथोलोजी आ रही हैं। जीवन में कुछ काम ऐसे होते हैं जो सोचकर नहीं होते बस हो जाते हैं मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ तो मैं शुक्रिया करती हूँ कि मेरे साथ ये हुआ। मेरी ज़िंदगी की बहुत बड़ी खुशी ये राइटिंग है।

ज़िंदगी को बदलने के लिए कभी-कभी किसी फ़रिश्ते की ज़रूरत होती हैं और मेरे लिए वो फ़रिश्ता शिनु (प्रतिभा सिंह) निकली जिसका मैं कितना भी शुक्रिया करूँ वो हमेशा कम ही हैं, इनकी वजह से मेरी ज़िंदगी में राइटिंग आई हैं जिसके लिए मैं इनका दिल से शुक्रिया करती हूँ।

मेरी ज़िंदगी कि दूसरी अहम कड़ी जो हर चीज़ों में पहले साँरी साँरी कहेंगी चाहें उनकी गलती हो या नहीं ये हमेशा सबकी मदद करती हैं। आप मेरे लिए हमेशा रेही रहती हैं,

JOIN TELEGRAM CHANNEL @EBOOKSIND

आप सच में बहुत अच्छी हो। आपके लिए इतना सा और कुछ नहीं हैं बस थैंक्यू कहना हैं।

प्रतिक्षा गाँगुली

"इंतज़ार: एक परिचय"

"कभी किसी को देखते ही जन्मों का सफर तय करना पड़ता हैं तो
कभी एक सपनों वाली मुलाक़ात भी काफ़ी होती हैं।"

वक्त कि मार हैं, वरना अकेले रहना किसको पसंद हैं, इंतज़ार तो सबको सबका रहता हैं। हाँ, कोई ज़ुबान से कहता हैं तो कोई आँखों से बयां करता हैं। इंतज़ार किसी साथी का, इंतज़ार किसी सपने का, इंतज़ार किसी अपने का, इंतज़ार किसी परिणाम का, इंतज़ार अपनी जीत का इंतज़ार अपनी पहचान का।

सब इंतज़ार ही तो करते हैं। इंतज़ार में हर पल ऐसे गुज़रता हैं जैसे साँसों को लेने के लिए हवाओं का चलना होता हैं। इंतज़ार का परिणाम चाहें जो हो पर कोशिश कभी अधूरी नहीं होनी चाहिए। इंतज़ार करते वक्त भी कभी ये नहीं सोचना चाहिए कि जिस उद्देश्य से ये इंतज़ार किया जा रहा हैं वो पूरा हो, हमें हमारा कार्य पूरी सिद्धत से करना है परिणाम कि चाह से नहीं।

इंतज़ार मानव जीवन का वो आधार है जहाँ मनुष्य अपने मन कि सारी इच्छाएँ इस एक पल के इंतज़ार में काटता हैं जिस पल उसे अपनी मनपसंद की चीज़ मिलनी हो चाहें वो चीज़ न ही मिले पर उसके इंतज़ार में काटा गया हर लम्हा उसके लिए बहुत ख़ास होता हैं इसलिए इंतज़ार कभी अलग नहीं होता हाँ, उस इंतज़ार को ही आप अपनी ज़िंदगी मत समझ लेना। उस एक पल के पहले जो पल और ज़िंदगी आप जी रहें जो उसको जी भर कर जिओ।

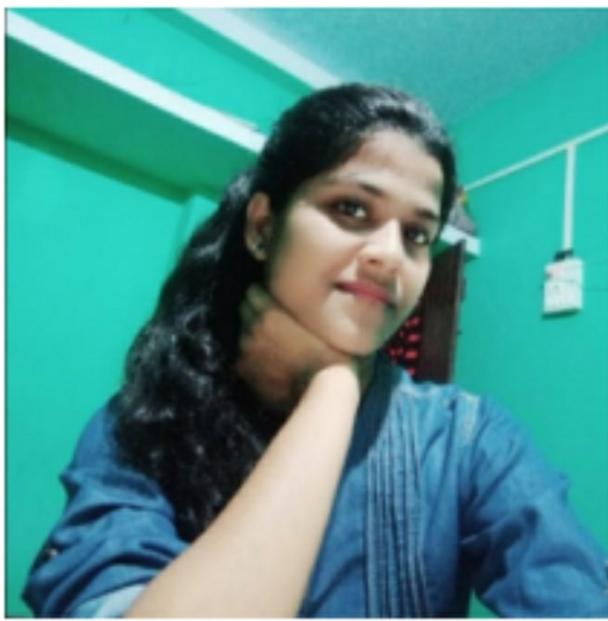
‘Index’

□ Pratiksha Ganguly (Compiler)	14
□ Pratibha Singh (Compiler)	20
□ Abhishek Mishra	23
□ Abhishek Mishra	26
□ Afrin	28
□ Ajay Digambar Ingle	32
□ Anjali 'Annu'	34
□ Ankur Mishra	36
□ Anuja Patil	38
□ Ashkar	40
□ Bhavik Mehta	42
□ Durgesh Pratap Singh Bharatwadi	44
□ Eric Graham	47
□ Garima Srivastava	49
□ Kishan Kushwaha	55
□ Mohit Madhusudan	57
□ Niranjan Jal	59
□ Nupur Sharma	61
□ Pankaj Gupta 'Hriday'	63
□ Parul Patidar	66
□ Payal Gadve	69
□ Prachi Agarwal	72

<input type="checkbox"/>	Prameet Singh	74
<input type="checkbox"/>	Prayash Tamang	76
<input type="checkbox"/>	Priya Kumari	79
<input type="checkbox"/>	Priyanka Mishra	85
<input type="checkbox"/>	Puja Pandey	87
<input type="checkbox"/>	Richa Singh Somvanshi	89
<input type="checkbox"/>	Rohit Toppo	91
<input type="checkbox"/>	Sangeeta Tripathi	93
<input type="checkbox"/>	Savan Yadav	95
<input type="checkbox"/>	Shruti Garg	98
<input type="checkbox"/>	Smitesh Shah	100
<input type="checkbox"/>	Sourabh Vishwakarma	103
<input type="checkbox"/>	Swapnil Hidau	105
<input type="checkbox"/>	Tulika Shrivastava	107
<input type="checkbox"/>	Vishwas	109
<input type="checkbox"/>	B Sai Sri Harshita	112
<input type="checkbox"/>	Bharathi	114
<input type="checkbox"/>	Bhavya Chugh	116
<input type="checkbox"/>	Chaithra	118
<input type="checkbox"/>	Ritik Kashyap	120

संकलक

प्रतिक्षा गाँगुली



"तेरे इंतज़ार से मेरी हर शाम रंगीन हो जाए।
दिल को जो आए तू हर वो ख्याल बन जाए। "

जीवन की डोर ना जाने कब छूट जाए कोई नहीं जानता इसलिए जो भी करना है अभी करना है कल का क्या पता साँसे हो या ना हो। जीवन वैसे ही बहुत कम होता है शुरू होने के पहले ही खत्म होने लगता है। मैं प्रतिक्षा गाँगुली हूँ बिहार के एक प्यारे से शहर की रहने वाली हूँ। मैंने बी. कॉम. किया है। आज से 8 माह पहले तक मुझे लिखने का शौक नहीं था मुझे लिखना बिल्कुल बोरिंग लगता था, पर वो कहते हैं ना जो किस्मत में हो वो खुद आपके पास चलके आती हैं मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। मेरे भाई (अभिशार गाँगुली) की बुक रंग में मुझे प्रतिभा मैम की वजह से लिखने का मौका मिला। उसके बाद योरकोट पे तो अधूरा सा कुछ एक पहचान बन गया है। अब एक दिन जो ना लिखूँ तो अधूरा-सा

लगता है। लिखने के बाद ज़िंदगी को देखने का नज़रिया ही बदल चुका है। ज़िंदगी जीने के लिए एक चीज़ बहुत ज्यादा ज़रूरी होती है वो है आप खुद। अगर आप खुश रहना चाहते हो तो किसी से कुछ माँगों मत बस दिया करो, बिना किसी चाह के और जो आपको सही लगे वो करों ना समाज की सुनो ना लोगों को बस अपने दिल की लिखने का सबसे ज्यादा फायदा तो ये है कि आप अपने मन की बात कह भी देते हैं और सब तारीफ़ भी करते हैं। ज़िंदगी में चाहे जो भी हो जाए खुश रहना आना चाहिए दूसरों के लिए नहीं सिर्फ़ अपने लिए। ये थी मेरी बातें जो आप सबको बतानी थी। आशा करती हूँ आप सब समझ सको।

"मेरी ज़िंदगी"

अब तुमसे इश्क़ जो हम बेपनाह सा करते हैं,
तेरी इबादत हम अब सुबह शाम करते हैं।

तेरी आशिक्की में हम कुछ यूँ कुर्बान हो जाएँ,
ज़माना ढूँढ़ता रहें, हम तुझमें कहीं खो जाएँ।

रह-रह कर आता हैं जब हमें छ़्याल ये तेरा,
सच कहते हैं तुझे देखने को हम तड़प जाते हैं।

तुझे ऐसा क्यों लगता हैं हम तुझे छोड़ जाएँगे,
बताओ सांसों से क्या कोई जुदा हो सकता हैं।

तुम क्यों समझते हो खुद को बेवजह ज़माने में,
वैसे, कोहिनूर भी अपनी कीमत कहा जनता हैं।

तेरी आँखों से मुझे ये दुनिया प्यारी सी लगती हैं,
मेरे नज़रों को तो बस एक नज़ारा तेरा भाता हैं।

कभी सोचा ना था हम तुझे इतना ज़्यादा चाहेंगे,
कभी सोचा ना था तेरे लिए कुछ भी कर जायेंगे।

इंतज़ार में होकर पागल कहीं सच में पागल न हो,
जाएँ हम करके तेरा इंतज़ार कहीं मार न जाएँ हम॥

—प्रतिक्षा गाँगुली

"इबादत सा इश्क"

एक तरफ इशारा तेरा
दूसरी तरफ लोगों में हम।

एक तरफ नज़रे लोगों की
तो दूसरी तरफ नज़रों में तुम।

एक तरफ इश्क तेरा,
दूसरी तरफ इबादत मेरी।

एक तरफ तुम खुदा जैसे,
दूसरी तरफ तुझे रब मानें हम।

एक तरफ गुस्सा तेरा,
दूसरी तरफ तुझे मानाना मेरा।

एक तरफ आशिकी ये तेरी
दूसरी तरफ तेरे आशिक हुए हम।

एक तरफ ये ख्याल तेरा,
दूसरी तरफ मेरे ख्यालों में तुम।

एक तरफ मेरे साथ में तुम
दूसरी तरफ तेरे इंतज़ार में हम॥

—प्रतिक्षा गाँगुली

“इश्क़ तुमसे”

ख़ामोश है रात, धड़कन का है शोर बस
आँखों में तो नींद नहीं दिल भी है बैचेन।

अब कैसे कहें तुम्हें कितना याद करते हैं,
आँखों से निंदे भी मेरी जाने कब से फरार हैं।

दिल की बढ़ रही धड़कनों का भी हम क्या
करें, तेरा नाम आते ही बैचैन हो जाती हैं।

ख़ामोशियाँ हैं अब मेरे चारों ओर फिर भी
तेरी आवाज़ से ही यहाँ शोर बड़ा मचा हैं।

उनकी झुकी नज़रों का तो हम फिर भी देखले
नज़रें जो उनसे मिल जाएँ उसे छुपाएँ कैसे हम।

हर रोज़ सोचते हैं हम उनको, नज़रों से न देखे
डरते हैं कहीं हमारी ही नज़र उन्हें ना लग जाएँ।

उसके इंतज़ार में जाने हम कब से हैं यूं बैचेन
तुम ही बताओं उन्हें बात ये हम कैसे बताएँ।

कितना चाहते हैं उन्हें अब उन्हें ही जताएँ कैसे
उनका चेहरा आँखों में हैं उनसे ही छुपाएँ कैसे।।

—प्रतिक्षा गाँगुली

"तुमसे, तुम तक"

उनके होंठों को चूम के देखा था हमने
इश्क का स्वाद भी चखा था हमने।

जो आए वो सामने हमारे उन्हें देखकर
इश्क के रंग भी रंगे थे हम।

उनका आना ही काफ़ी था हमारे लिए
वो क्रीब बैठकर दिल धड़का गए।

जो सोचते हैं हम उनके बारे में भी
लफ़ज़ों में उनका फ़िक्र आ जाएँ।

कैसे कहें किस हृद तक प्यार है उनसे
बेहद से ज़्यादा हैं वो मुझमें।

ख्यालों में मेरे वो रोज़ आते ही रहते हैं
फ़िक्र जिनका रोज़ हम करते हैं

सवालों में सिर्फ़ उनका नाम होता हैं
जो मेरे जवाबों में आ जाते हैं।

हर रोज़ उन्हें सोचते हैं हम इतना की
सपने मेरे वो खुद ही आ जाते हैं॥

—प्रतिक्षा गाँगुली

Compiler

Pratibha Singh



**"My waiting is always unconditional Because when
we wait for any conditions then that hurts most."**

My life my rules that are the motto of my life, I'm Pratibha Singh, belongs to my small alone world. By profession, I'm an engineer and by heart, I'm a poet. I'm always want to live my life with my conditions. That's why I start writing because when I write it's give me peace and I feel relax. I don't know when I started to write but for the last two years, I write continuously. I never think my write-up was published but it was published and now I'm compiling two anthologies, 3rd is intezaar this anthology and 4th is ongoing and two anthologies are starts in some days. When I think of this whole journey then I smiled and see my work, which makes me proud and confident.

"I'm waiting"

I'm waiting that time when I'm yours forever,

No matters how long this is waiting but,

I know one day I'm yours and you are mine forever.

Sometimes I just admire that day

when I'm with you and you with me,

You know I'm always dreaming of you

and live in these imaginations.

I am waiting for the day when I will

do makeup for you, and you will see me,

I love you my love and I always want to love you

I know you love me more than I do,

But one thing more important and that is

we always love and stay together.

—@adhoore_lafj

JOIN TELEGRAM CHANNEL @EBOOKSIND

हिंदी रचनाएँ

प्रकाशक
अभिशार गाँगुली



“बिना जाने तेरे आने की तारीख, मैं तेरा इंतज़ार करता हूँ।
मैं तूझसे सनम, बेहद, बेइंतहा और बेहिसाब प्यार करता हूँ।”

अपने दिलबर का इंतज़ार करने वाले, बिना उसके आने की तारीख जाने, उसकी हर रोज़ राह ताकने वाले, इंतज़ार को अपना मनपसंद काम समझकर चारों पहर इंतज़ार करने वाले इस इंतज़ारपसंद रचनाकार का नाम ‘अभिशार गाँगुली’ हैं। ये जब कुछ नहीं करते हैं तब भी इंतज़ार करते हैं और जब कोई और काम कर रहे होते हैं तब भी अपनी स्वप्नसुंदरी का इंतज़ार करते हैं।

‘इंतज़ार-ए-यार’

तेरे आने की कोई मुकर्रर तारीख मालूम नहीं मुझको,
फिर भी मैं सिद्धत की हद तक तेरा इंतज़ार करता हूँ।

कौन कहता है कि साथ रहना जरुरी होता हैं इश्क को,
मैं तो बस उसके होने के एहसास से भी प्यार करता हूँ।

नहीं पता कि वो इस ज़माने में मौजूद हैं भी कि नहीं,
कोई होगा ‘मुझसा’, कहीं इस बात का ऐतबार करता हूँ।

जानता हूँ मैं कि मोहब्बत बस तिज़ारत ही हैं जहां में,
फिर भी मैं दादी के क्रिस्सों पर यकीं हर बार करता हूँ।

हरपल दिल से आती हैं सदा कि मेरा इंतज़ार फिजूल हैं।
मैं फिर भी अपनी रुह के लिए दिल से तक़रार करता हूँ।

सुना है, इस जहां में नहीं उस जहां में मिलते हैं रुहानी
इश्क वाले, मैं उस घड़ी का इंतज़ार बार-बार करता हूँ।

बस ख़वाबों में ही हुई हैं तूझसे बातें मेरी 'जान-ए-मन',
मैं ख़वाब को ही हक्कीकत मान तूझसे इज़हार करता हूँ।

लोग कहते हैं ख़वाब बस ख़वाब होते हैं कभी मुक़म्मल

नहीं होते, मैं ख्वाबों की दुनिया में ही इकरार करता हूँ।

इश्क एक खूबसूरत सा ‘ख्वाब’ हैं, ‘इश्क’ वाले देखते हैं।

मैं अपने हर ‘ख्वाब’ को ख्वाब में ही ‘साकार’ करता हूँ।

तिजारतें भी होती हैं, हमारे नाम की बोली भी लगती हैं।

मैं छोड़ जिस्मानी बाज़ारी, रुह को अपना यार करता हूँ।

कि उसके आने की तारीख मालूम नहीं मुझको ‘अभि’,

मैं फिर भी उसके बिना भी बस उसी से प्यार करता हूँ।

—©अभि:एकतन्हामुसाफ़िर

अभिषेक मिश्रा



“कभी कभी कुछ इंतज़ार ऐसे होते हैं,
जिनकी इच्छा तो होती है पर पूरे नहीं होते।”

इनका नाम अभिषेक मिश्रा हैं। ये मध्य प्रदेश के रहने वाले हैं। ये कहते हैं, राइटिंग इनका प्रोफेशन नहीं है, लॉकडाउन में खाली बैठने के कारण इन्होंने कुछ लिखा और ये धन्यवाद देते हैं उन लोगों को जिन्होंने उसे पढ़ा और इन्हें उत्साहित किया लिखने को और इन्हें लिखना अच्छा लगने लगा जब अच्छे रिस्पॉन्स मिलने लगे तो इन्हें लगा सच में ये बहुत अच्छा माध्यम है खुद की भावनाएँ दिखाने का और खुद से बातें करने का।

'इंतज़ार'

इंतज़ार है एक अजीब पल का, कहूँ भी तो कैसे?
जिम्मेदारियों के पहाड़ तले दबा, निकलें भी तो कैसे?

अजीब है वो पल, उनका ख्वाब,
उनकी हक्कीकत और फिर एक अजीब-सा इंतज़ार,
उन पलों के बगीचे में, सिर्फ़ कर ही सकते हैं, ये भी कहूँ तो कैसे?

ये अजीब-अजीब इंतज़ार कभी दुःख देते हैं,
कभी अनजानी मुस्कान,
पर इन पलों के इंतज़ार के तारे आसमान में ही टिमटिमाते रहते हैं,
कभी पूरे नहीं होते, ये कभी खुद से ही कहूँ भी तो कैसे?

इंतज़ार है एक अजीब पल का, कहूँ भी तो कैसे?
अपनी इच्छाओं का इंतज़ार,
दूसरों की खुशी का इंतज़ार,
सपनों के साकार होने का इंतज़ार
किसी के साथ रहते हुए उससे दूर जाने का इंतज़ार
और दूर जाके उसके पास आने का इंतज़ार
प्रकृति की गोद में सुकून का इंतज़ार
टिमटिमाते तारों में भी किसी के ख्याल का इंतज़ार
चमकती जुगू, उड़ता चमगादड़, फूल पर बैठी तितली,
सङ्क पर सोते कुत्ते,
दीवाल पर चिपकी छिपकली क्या क्या नहीं बन जाने का इंतज़ार

ये सब अजीब हैं इंतज़ार, पर कहूँ भी तो कैसे?

इंतज़ार है एक अजीब पल का, कहूँ भी तो कैसे?

—अभिषेक मिश्रा

अफिन्न



“इंतज़ार का पल सबसे मीठा होता है
इन ही में तो मेरी जीने की वजह है”

इनका नाम अफिन्न है। ये केरला की रहने वाली है। इन्हें कविता लिखना ओर संगीत सुनना पसंद है अभी ये १२ वीं कक्षा में पढ़ रही हैं। आगे हिंदी में पी. एच. डी. करना चाहती है।

"मैं बस उसी पल का इंतज़ार करती हूँ"

ज़िंदगी एकदम छोटी सी है,
मैं कुछ चीजें होने के लिए इंतज़ार करती हूँ,
न जाने कब और कैसे वो पूरी कर लूँ,
इस बात की ख़बर तो मुझे नहीं है,
मगर मैं दिल से खुदा से मन्त्रत माँगती हूँ,
जो भी सपने मैंने देखे हैं,
वो सब कुछ सच हो जाए।

आज जो मैं एक इंसान बन रही हूँ,
उस बात पर मैं बहुत खुश हूँ
मैं अपने आप को रोकना नहीं चाहती हूँ,
मैं बस उसी पल के लिए इंतज़ार करती हूँ
जो मैं अपनी सारे सपने पूरे कर पाऊँ,
मैं अपनी मंज़िल को पार करना चाहती हूँ।

जभी मैं अकेले रात में बैठ लेती हूँ,
अनजाने में कहीं एक अल्फ़ाज़ आने लगता है,
तो मेरी दोस्ती क़लम की बाँसुरी से होने लगती है
बस एक काग़ज़ लेकर उसमें लिपटने की कोशिश करते हैं,
मेरी दिल में जो एहसास है
वो शब्दों के ज़रिए उसमें भर लेते हैं
तब अनजाने में कहीं अपने आप को एक सवाल पूछने लगती है

मैं कब से इस पल का इंतज़ार करती हूँ?

जो मैं एक बहुत अच्छी लेखिका बनना चाहती हूँ,
मैं एक दिन अपनी कविताओं को आवाज़ देना चाहती हूँ,
मैं अपने सपने के लिए कुछ अलग सी चीज़ें करना चाहती हूँ,
मैं इस दुनिया से अपनी राज़ी ताक़त के बारे में बताना चाहती हूँ,
मैं एक दिन दिल से उसके बारे में एक सुरीला गाना बनना चाहती हूँ,
न जाने कितने सपने हैं,
इस छोटे से दिल में जिन्हें लेकर घूम रही है
मैं आशा करता हूँ कि वो सब कुछ सच हो जाए।

मैं जब रात में अकेले आसमान को देखती हूँ,
तब अंधेरे में बहुत सारे चमकते हुए सितारे को नज़र आते हैं
तब मैं एक सितारे से अपनी ख़्वाहिशें बता लेती हूँ,
मैं एक दिन एक ख़ास इंसान से मुलाक़ात करना चाहती हूँ,
जो सच में इस लड़की के हर मोड़ को देखा है।
मुझे पहले किसी के सामने कमज़ोर होने में बहुत डर लगता था,
मगर न जाने कब उससे में सब कुछ कहने लगी
मैं खुद ही एक बेहतरीन इंसान बनने लगी,
वो मेरी ज़िंदगी की राज़ी ताक़त है
उसके बिना ये लेखिका भी अधूरी है,
ज़िंदगी में मैं बस उसे एक बार देखना चाहती हूँ,
मैं बस उसी पल का इंतज़ार करती हूँ।

मैं एक दिन कुछ लोगों से मुलाक़ात करना चाहती हूँ,

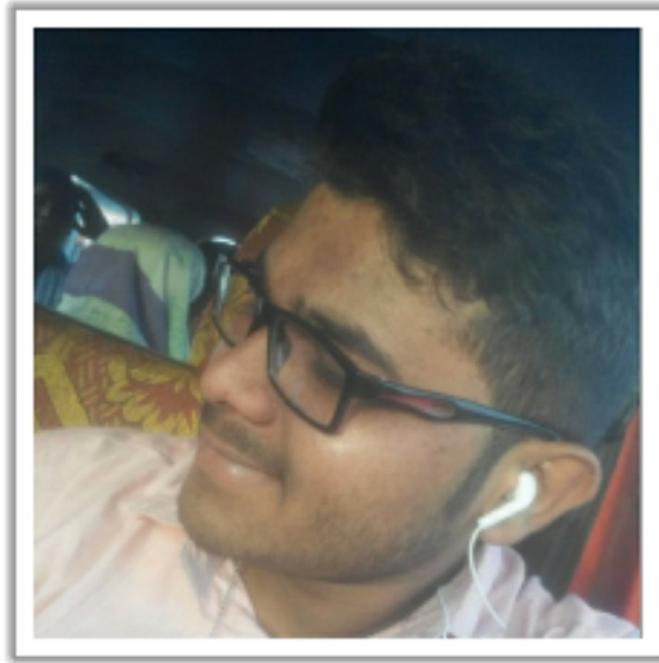
जो सच में मेरी राज़ी दुनिया है,
मुझे उन लोगों के साथ एक बहुत
जादुगरी वाला रान्ता रखना चाहती हूँ।
शायद मैं कभी उदास हो जाती हूँ
मगर उन लोगों की बात मुझे ताक़त दिलाने लगती है,
मैं बस उन लोगों को एक बार देखना चाहती हूँ,
मैं बस उसी घड़ी का इंतज़ार करती हूँ,
एक दिन मैं अपनी मूर्तियों की कॉन्सर्ट देखना चाहती हूँ
मैं उसी पल में खोना चाहती हूँ
मैं बस एक बार "मैं रहूँ या न रहूँ"
वही गाना चिलाके गाना चाहती हूँ
तब न कोई आस होगी,
बस ये दिल के धड़कन खुशी से शोर मचाती होगी
तब आँखें बंद करते ही,
कानों में एक सुरीले आवाज़ सुनती होगी
तब मैं अपनी आँसू को रोक नहीं पाऊँगी
ज़िंदगी मैं बस ये सारी ख़्वाहिशें मुझे पूरी करनी है
मैं बस उसी पल का इंतज़ार करती हूँ।

आज भी एक पहली मुलाक़ात होना बाकी है
आज भी अपनी राज़ी ताक़त के बारे में इस दुनिया से बताना बाकी है,
आज भी उसे वस्ल करना बाकी है,
आज भी एक अच्छी लेखिका होना बाकी है,

आज भी बहुत अल्फाज़ लिखने के लिए बाकी है,
आज भी बहुत ज़ज़बात बोलने के लिए बाकी है,
आज भी मेरी अध्यापिका को अपनी लिखी हुई किताब देना बाकी है,
आज भी अपने खास शख्स को किताब देना बाकी है,
मैं खुदा से बस यही दुआ माँगती हूँ,
एक दिन ये सारी सपने सच हो जाएं,
यही तो मेरी जीने की वजह है,
मैं बस उसी पल का इंतज़ार करती हूँ॥

—अफ्रिन्न

अजय दिगंबर इंगले



"मेरा असली लक्ष्य खुद को खोजना हैं,
और खुद की खोज में हौसला बुलंद रखना हैं।"

इनका नाम अजय दिगंबर इंगले है। ये महाराष्ट्र राज्य में जलगाँव जिले के नांद्रेहवेली गाँव के रहने वाले हैं। इन्होंने अपने बी. कॉम. की पढ़ाई खानदेश कॉलेज एजुकेशन सोसायटी मूलजी जैथा कॉलेज, जलगाँव से पूरी की है, और इन्होंने अपनी आगे की पढ़ाई कवयित्री बहिनाबाई चौधरी नार्थ महाराष्ट्र यूनिवर्सिटी से पूरी की है। इन्हें आर्ट करना, कविता लिखना, कहानी लिखना, गाना गाना, किताबें पढ़ना काफ़ी अच्छा लगता है। इन्हें प्रकृति से काफ़ी लगाव है और इन्हें नए जगहों में घमना भी पसंद है। ये मराठी, हिंदी, इंग्लिश, पाली, अहिरानी, संस्कृत आदि कई भाषाएँ भी जानते हैं।

"मोहब्बत एक इंतज़ार हैं।"

मोहब्बत ही 'रौद्र' हैं,
मोहब्बत का दर्द भी बड़ा जानलेवा हैं,
मोहब्बत जन्मत भी और मौत भी
फिर भी हर एक को मोहब्बत का ही 'इंतज़ार' हैं।

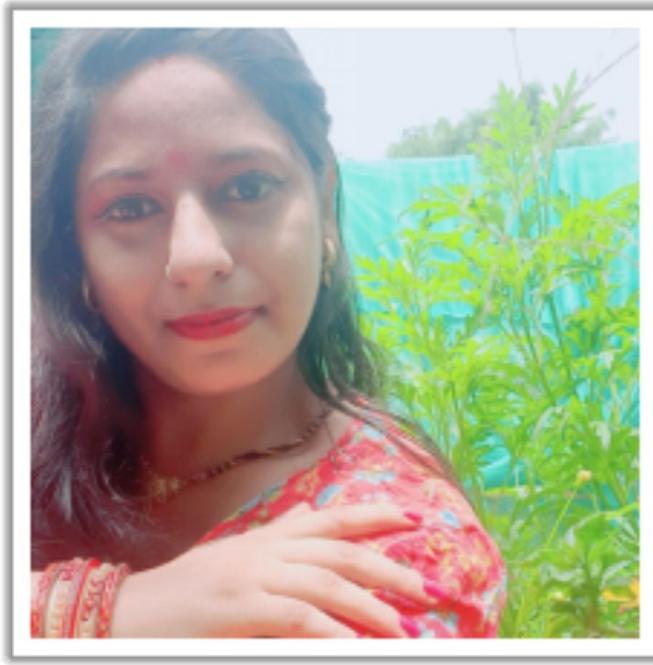
यह मोहब्बत का इंतज़ार ही खत्म हुआ हैं अब
मोहब्बत ने इस दिल को पुकारा हैं अब,
खत्म हो गया हैं, यह इंतज़ार अब
दिल के ज़ज़बातों को समझना हैं अब।

लफ़ज़ों का प्यार भरा सा एहसास सहेजना हैं अब,
मोहब्बत की अधूरी सी बातों को सुनना हैं अब,
जो बैचेन था दिल इस मोहब्बत को पाने के लिये
उस दिल के दर्द को सहेजना हैं अब।

इस इंतज़ार की शुभ घड़ी आई हैं,
मोहब्बत के लिये ढेर सारी खुशीयाँ लायी हैं।
उस मोहब्बत को 'मोहब्बत' से मिलना हैं अब॥

—अजय दिगंबर इंगले

अन्जली (अन्नू)



"हाँ, मैं इंतज़ार करती हूँ, उस पल का जब मैं
इस "इन्तज़ार" का "इन्तज़ार" करना छोड़ दूँ।"

ये अन्जली (अन्नू) हैं। ये दिल्ली की रहने वाली है। इन्हें किताबें पढ़ने का, घूमने का और लिखने का बहुत शौक है। इन्होंने कभी सोचा भी नहीं था ये कभी किसी किताब में लिख पाएँगी। इनके इस शौक को प्रोत्साहित प्रतिक्षा जी ने किया और हाँ कहते हैं न अगर किसी काम को चाहत बना के करो तो ज़रूर पूरी होगी बस इन्होंने भी अपने लिखने के शौक को अपनी चाहत बना ली और इस लिखने की चाहत को कभी ख़त्म नहीं होने देंगी।

"इंतज़ार है आपके बदलने का"

हाँ, मुझे इन्तज़ार है उस पल का,
जब तुम अपनी बाहों को
मेरा तकिया बना के
मुझे प्यार से सुलाओगे।

हाँ, मुझे इन्तज़ार है उस पल का,
जब तुम मेरे क़रीब आकर कहोगे,
तेरे हर ग़म में मेरी भी
आँखे नम हो जाती हैं।

हाँ, मुझे इन्तज़ार है उस पल का,
जब तुम बन्द कमरे में
नहीं सबके सामने
मेरा मान-सम्मान करोगे।

हाँ, मुझे इन्तज़ार है उस पल का,
जब तुम थाम के मेरा हाथ
कहोगे सरेआम, हम अब
कभी जुदा नहीं होगे मेरी जान।

हाँ, मुझे इन्तज़ार है उस पल का,
जब हर पल तुम मेरे क़रीब हो,
दूर भी हो तो हर पल तेरे दिल बस

JOIN TELEGRAM CHANNEL @EBOOKSIND

मेरी ही मेरी ही तस्वीर हो॥

—अन्जलि (अन्न)

अंकुर मिश्रा



“बातें अपनी दिल की इस क़दर किया करते हैं,
ज़बात को बयाँ कोरे पन्ने में किया करते हैं”

अंकुर मिश्रा जो वर्तमान में देवास, मध्यप्रदेश में कार्यरत एक उभरते हुए लेखक हैं। जो कि ज़िंदगी और नौकरी का संतुलन बनाये रखते हुए अपने लेखन के शौक को ज़िंदा रखे हुए हैं। इनकी रचनाएँ पञ्चास से ज़्यादा किताबों में प्रकाशित हो चुकी हैं। भविष्य में ये अपनी सभी रचनाओं को खुद की पुस्तक में संजोने का ख़ाब रखते हैं। यहां पे वे उस ख़ास दिन के इंतज़ार को आप सबके सामने रख रहे हैं जो शायद हर बेकरार दिल रखना चाहता है।

"उस दिन का इंतज़ार"

जिस दिन से दोगे साथ मेरा तुम,
उस दिन से हर पसंद पूरी होगी।

जिस दिन से बिन कहे समझोगे तुम,
उस दिन से कोई आस न अधूरी होगी।

जिस दिन से रुठोगी मगर सिर्फ़ प्यार से,
उस दिन से रिश्तो में जरा भी न दूरी होगी।

जिस दिन से सच्चा दोस्त मानोगे मुझे तुम,
उस दिन से अपने बीच कोई न मजबूरी होगी।

जिस दिन से उठायेंगे जिम्मा इक-दूसरे का,
उस दिन से किसी तीसरे की न मज़दूरी होगी।

जिस दिन से पायेंगे इक-दूसरे में इत्मिनान दोनों,
उस दिन से रिश्तों की महक फिर कस्तूरी होगी।

पर जाने कब मुकम्मल होगा उस दिन का इंतज़ार,
एक तरफा इश्क आखिर कब तक रहेगा यूँ बेक़रार।।

—अंकुर मिश्रा

अनुजा पाटिल



ये अनुजा पाटिल है। जो पेशो से केमिस्ट्री की प्रोफेसर है। इनका घर कर्नाटक के जिला बेलगाम में है। ये बचपन से ही छोटी-छोटी कविता लिख रही है।

'प्यार'

प्यार किया है तुझसे,
हर रस्म निभाऊँगी।

फ़िक्र मत करना,
तुझसे किया
हर वादा निभाऊँगी।
बस कुछ पल तेरे
बाहों का सहारा
मिल जाए,
मैं तेरा हर सपना
पूरा करूँगी॥

बस तेरा साथ हो,
फिर चाहे कैसा वक़्त हो।
खुशी से ज़िंदगी गुज़ार लेंगे,
तुम पास हो, बस मेरे हो,
यही बात काफ़ी है,
खुश रहने के लिए॥

—अनुजा पाटिल

अश्कार



"वो है मेरे पास फिर भी उसे खोने से डरती हूँ,
और रात होते ही सुबह का इंतज़ार करती हूँ।"

इनका नाम अश्कार है। ये मध्यप्रदेश के शाजापुर जिले की रहवासी है। इन्होंने सह-लेखिका के रूप कई साहित्यिक संग्रह में लेखन कार्य किया है। ये अपने दिल को छूने वाले विषयों पर लिखती है। प्रेम में जितना जरूरी प्रेम करना और एक दूसरे को समझना होता है उतना ही जरूरी इंतज़ार है और इसी भावना को समर्पित "इंतज़ार" संकलन में लेखन कार्य किया है।

“तेरा इंतज़ार”

तेरा इंतज़ार तू ना आया अब तक चंद वे,
जब से तू गया मुझे छोड़ के।
मैं आज भी इंतज़ार तेरा करती हूँ,
तू ना सही मैं तेरी यादों से प्यार करती हूँ।

मेहंदी का रंग तो चढ़ा था
सुंदर तेरे नाम की जो थी,
लेकिन तूने तो अपनी मोहब्बत किसी
और के नाम लिख दी।

जब से तू गया दिल मेरा तोड़ के,
ना देखा तुमने एक दफ़ा मुड़ के।
अगर तू खुश है किसी और के साथ,
मगर मेरा तो रो रो के हुआ बुरा
हाल।

मैं माँगती हूँ आज भी दुआ
बस तेरे लिए,
दिल दुखता है तेरे झूठे
वादों से जो तूने किए।
तू हो गया किसी और का
मैं किसी और की नहीं हुई। ,
याद आती है वो बाते वो

JOIN TELEGRAM CHANNEL @EBOOKSIND

राते जब हमारी मुलाकाते हुई॥

—अश्कार

भविक मेहता



"इस आशिक को तुझसे मिलने का इन्तज़ार रहेगा,
मिलने तक यह आशिक याद की नदी में बहेगा।"

इनका नाम भविक मेहता है। ये 16 साल के हैं। ये इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहे हैं लेकिन रचनात्मक लेखन में रुचि होने के कारण यह इंस्टाग्राम और योरकोट पर __my.heart.says के नाम से हिंदी/इंग्लिश में शायरी/quotes लिखते हैं।

"इन्तज़ार है उस दिन का"

जब पापा को प्यार दिखा पाऊँगा।

उनके चेहरे पर एक मुस्कान लाऊँगा।

दुख के क्षण भी सुर से गाऊँगा।

उनके चेहरे पर एक मुस्कान लाऊँगा।

मैं अपने आप को अच्छा बेटा कब कह पाऊँगा?

अपने पिता को गले कब लगाऊँगा?

उस दिन का इन्तज़ार करेंगे।

तब तक हर लम्हा खुशी से भरेंगे॥

—भविक मेहता

दुर्गेश प्रताप सिंह "भारतवादी"



"एक पन्ने पे लिख दूँ अपनी पूरी कहानी इश्क में इतनी कम चोटें खाई नहीं मैंने,
पर बोलो तो लिख दूँ पूरी ज़िंदगानी, इश्क में ज्यादा खुशियाँ पाई नहीं मैंने।।

उत्तर प्रदेश के गोंडा जनपद के निवासी श्री दुर्गेश प्रताप सिंह "भारतवादी" हिंदी साहित्य के उभरते हुए कवि हैं। वर्तमान समय में ये भारतीय वायु सेना के अनायुक्त अधिकारी(वायु योद्धा) के रूप में कार्यरत है। आपकी कविताएँ भाव प्रधान होती हैं। आप Ek tarfa ehsas नाम से स्वयं का यूट्यूब चैनल चलाते हैं, जिसमें आप स्वयं की कविताओं को प्रस्तुत करते हैं। ये स्वभाव से बेहद सरल एवं बहिर्मुखी प्रतिभा के धनी हैं। आपकी कविताओं का भाव प्रेम रहता है।

इनकी कई कविताओं में राष्ट्रवाद की झलक भी देखने को मिलती है। ये मुख्यतः वियोग शृंगार और वीर रस की कविताएँ लिखते हैं, ये अपनी कविताओं से समाज की यथार्थ दृष्टि रचना को भी झगझोरने का प्रयास करते हैं।

‘इंतज़ार’

कुछ तो अधूरी है ज़िंदगी,

पूरी करने को जी रहा हूँ।

कुछ तो बाकी है सपनों में

धागों में पिरो रहा हूँ।

आज भी चाँद में खोजता हूँ कुछ

उसकी आस में कहीं खो रहा हूँ।

मिल जायेंगे कहीं किनारे पे

इस छवाब से सपने सजो रहा हूँ।

कुछ तो अधूरी है ज़िंदगी

पूरी करने को जी रहा हूँ।

है कुछ उम्मीद उस प्यार से

ऐसी है दीवानगी उस यार से।

दिल जानता है पर मानता नहीं

घर बनता नहीं बालू की दीवार से,

मैं बदल दूँगा क्रिस्मत इंतज़ार

ये बात धूट-धूट पी रहा हूँ।

कुछ तो अधूरी है ज़िंदगी

पूरी करने को जी रहा हूँ।

अब तो लड़ाई है खुद से उससे से

बस इंतज़ार मेरा हथियार है।

जिससे कल भी बहुत प्यार था

आज भी उससे बहुत प्यार है।

जो कल तक सपनों में आती थी

अब सपनों में भी बस इंतज़ार है।

है इश्क़ सच्चा मेरा यारों

हर याद में बस जाम पी रहा हूँ।

कुछ तो अधूरी है ज़िंदगी

पूरी करने को जी रहा हूँ॥

—दुर्गेश सिंह 'भारतवादी'

एरिक ग्राहम



"यह इन्तज़ार का इम्तिहान हैं, इसमें सिर्फ़
पास नहीं होना पर डिस्टिंक्शन लाना है।"

एरिक ग्राहम एक भारतीय लेखक हैं। इनका कलाकार नाम "Ezeee" है। लेखक मानते हैं कि हर इन्तज़ार एक इम्तिहान जैसे होता है, जिसका परिणाम में कुछ सीखा जाता है।

"इन्तज़ार या इम्तिहान"

लम्हा लम्हा गुजरे कैसे,
ये इन्तजार बने इम्तिहान जैसे।
तुम बिन ये वक्त भी ना गूजरे,
अब पल पल तुम्हारी बातों को तरसें।

इन्तज़ार से सीखा हैं उनका मोल,
इन्तज़ार का इम्तिहान क्यों इतना लम्बा हैं बोल।
थोड़ा तो तारों को तोड़ो,
और किसी तारे को मेरा इम्तिहान खत्म करने को बोलो।

जरा इस इन्तज़ार के इम्तिहाँ को तो तोल,
क्या बनता इसका कोई मोल।
इन्तज़ार की नहीं इम्तिहान की घड़ी हैं,
ज़रा आँखों को उठा के देखो अभी पूरी ज़िंदगी पड़ी है।

पलट कर तो देख,
इन्तज़ार के इम्तिहाँ में उम्र बीत गई।
बंजर धरती भी हरी हो गई।
पर क्रिस्मत हमसे खफा रह गई॥

—एरिक ग्राहम

गरिमा श्रीवास्तव



"इंतज़ार मुझको उस एक पल का है मुद्दतों से, जिस एक पल के बाद किसी और पल का इंतज़ार ही ना रहे।"

इनका नाम गरिमा श्रीवास्तव है। ये उत्तराखण्ड की रहने वाली हैं। वर्तमान में ये दिल्ली में सरकारी पद पर कार्यरत हैं। इनकी रुचिया कविताएँ एवं कहानियाँ, लिखना और पढ़ना हैं। इनके अलावा इनको नई जगह देखना, खुद को प्रकृति से जोड़ कर रखना दिल को सुकून देता है।

'इंतज़ार'

निधि आज सुबह से ही बहुत खुश थी। हो भी क्यों ना, आखिर लंबे इंतज़ार के बाद कल उसकी पहली मुलाक़ात, माधव के साथ जो होने वाली थी। निधि के लिए वो एक दिन काटना भी मुश्किल था जब माधव उसके सामने होगा।

माधव से निधि की मुलाक़ात हुए यूं तो ६ महीने गुजर गए थे, लेकिन वो मुलाक़ातें उनकी वीडियो कॉल पर हुई थी। माधव और निधि की मुलाक़ात जीवनसाथी की वेबसाइट पर हुई थी, माधव ने निधि को इंटरेस्ट भेजा, जाने क्या था, माधव की उस तस्वीर में, कि निधि देखते ही दिल दे बैठी। उसने झट से इंटरेस्ट एक्सेप्ट किया, और फिर शुरू हुआ दोनों की बातों का सिलसिला। जब जवां दिल मिलते हैं, तो सैकड़ों सपने बुनते हैं। होना क्या था फिर तो दोनों के दिन की शुरुआत और अंत एक दूसरे की कॉल और एस. एस. से ही होता था। न जाने यूं ही बात करते-करते कब दोनों एक दूसरे के हो गए। निधि ने माधव को अपना जीवनसाथी मान लिया था, और शायद माधव ने भी, दोनों ने फैसला किया के अब दोनों को परिवार से बात करके इस रिश्ते को आगे बढ़ाया जाना चाहिए। निधि बिहार के गाँव से थी, और माधव चंडीगढ़ में रहने वाला शहरी लड़का। माधव और निधि ने मिल कर तारीख तय की। माधव ने बोला, कि वो वक्त पर पहुँच जाएगा।

निधि ने कल की सारी तैयारियाँ कर ली थी। रात में सोने से पहले उसने माधव को शुभ रात्रि बोलने को फोन मिलाया। पर ये क्या, एक रिंग हुई, दो रिंग हुई, और फोन कट गया। निधि ने दुबारा फोन मिलाया लेकिन क्या इस बार भी फोन नहीं मिला। उसने सोचा वो भी व्यस्त होगा, आखिर कल उसको सुबह-सुबह की फ्लाइट जो लेनी है।

वो बस माधव को सोचते सोचते, उसके ख्यालों में खोए हुए, आने वाले कल की मुलाक़ात के सपनों में खो गई। कैसा दिखता होगा माधव सामने से, क्या उसकी मुस्कुराहट उतनी ही प्यारी होगी, जितनी फोन पर दिखती है? क्या हँसते हुए उसके दोनों गालों पर जो डिंपल पड़ता है, सामने से देखने पर भी क्या वो उसको उतना ही दीवाना कर देगा। निधि का बस चलता तो देखते ही देखते वो वक्त को पहिए लगा कर तेज़ रफ़तार से दौड़ा देती। लेकिन अभी तो माधव को देखने के लिए उसे करना था इंतज़ार, बस थोड़ा सा और इंतज़ार।

रात बीत गई। सुबह के सूरज की किरण झरोखे से होती हुई जब निधि के चेहरे पर पड़ी तो

निधि हड्डबड़ा कर उठ खड़ी हुई। अरे ये क्या ७ बज गए, उसको तो अभी बहुत कुछ करना है। वो उठी और झट-पट तयारियों में जुट गई। वो आज उतना खूबसूरत दिखना चाहती थी, जितना वो आज से पहले कभी न लगी हो। ११ बजते-बजते उसने कपड़े पहने और तैयार होकर खुद को आइने में निहारने लगी। माधव कभी भी पहुँचता होगा। आज वो सुंदर तो बहुत लग रही थी, पर कुछ तो कमी थी। उसने फिर से ध्यान से खुद को देखा। अरे बिंदी! और एक छोटी सी बिंदी माथे पर लगाते ही, उसकी खूबसूरती में जैसे चार चाँद लग गए।

अब बस निधि को इंतज़ार था तो, माधव का। एक घंटा और बीत गया, लेकिन माधव नहीं आया, उसने अपना फोन उठाया। सुबह से माधव का न ही कोई कॉल था, ना ही कोई मैसेज। निधि को थोड़ी घबराहट हुई। वो तो सुबह से ही तैयारी होने में इतनी व्यस्त थी, कि माधव को कॉल या मैसेज करना वो भूल ही गई थी। उसने माधव को फोन लगाया। पर ये क्या, नंबर नॉट अवेलेबल।

निधि ने फिर से फोन मिलाया। जाने कहाँ था माधव। १ बार, २ बार लगातार निधि माधव को फोन मिला रही थी, लेकिन उसका फोन नहीं मिला। निधि का मन किसी अनहोनी से घबरा रहा था। क्या करे वो, उसके पास न तो माधव के घर का पता था, ना ही उसके दोस्तों का नंबर। अब वो कैसे पता करे, कि आखिर कहाँ हैं उसका माधव।

शाम के ६ बज गए, माधव का कोई पता नहीं चला। निधि अपने कमरे में बैठी दीवार को ताकते हुए, बस रोए जा रही थी। कही रास्ते में माधव के साथ कुछ हो तो नहीं गया? कहाँ गया माधव ? वो क्या करे उसको नहीं पता था। जब से माधव से मिली है, एक दिन नहीं बीता कि, माधव से उसकी मुलाक़ात न हुई हो, फोन पर ही सही। लेकिन आज जब वो एक-दूसरे के आमने-सामने आने वाले थे, एक-दूसरे को हमेशा के लिए अपनाने वाले थे कहा गया माधव??

जाने रोते-रोते कब निधि की आँख लग गई। जब सुबह निधि उठी, तो उसने फिर से माधव को फोन लगाना शुरू किया। पर ये क्या आज भी वही। ऐसा करते करते दिन-महीने जाने कहाँ बीत गए। ना माधव का फोन आया और न ही उसकी कोई खबर।

पर निधि आज भी रोज़ सुबह उठती है, एक उम्मीद में, कि कभी तो उसका इंतज़ार खत्म होगा।

कभी तो माधव उसके सामने होगा। कभी तो वो पहली मुलाकात होगी। और वो पहली मुलाकात उसके आने वाली हर खुशी का आगाज़ होगी।

बस यूँ ही वक्त गुजरता गया, निधि के घर वालों ने एक अच्छा सा लड़का देख कर उसकी शादी करा दी। निधि कुछ न कह सकी, कहती भी तो क्या? वो तो जानती ही नहीं थी, कि उसका माधव कहां गया यूँ अचानक। पर वो जानना चाहती थी, बहुत से सवाल थे उसके मन में, लेकिन वो किसी से कह नहीं सकती थी।

एक दिन शाम को निधि का फोन बजा, निधि ने फोन उठाया। निधि ने हैलो बोला। दूसरी तरफ से उसका जवाब आया, "कैसी हो निधि? पहचाना???"

वो आवाज़, उसको सुनते ही निधि का पूरा शरीर काँपने लगा। उसको यकीन ही नहीं हो रहा था कि ये आवाज़ क्या सच में उसी की है। निधि बोली, "माधव? तुम ही हो न?"

दूसरी तरफ से जवाब आया, "हाँ निधि! मैं ही हूँ। कैसी हो तुम?"

निधि जो कल तक ये दुआ माँग रही थी, कि उसका माधव आ जाए, आज वो उसकी आवाज़ सुनकर चुप थी। कितने सवाल थे उसके मन में, पर अचानक ये क्या हुआ, अब वो कुछ नहीं बोलना चाहती थी, कुछ नहीं सुनना चाहती थी।

निधि बोली, "मैं ठीक हूँ माधव, बहुत खुश हूँ। सब अच्छा चल रहा है। बस मेरे पति आते ही होंगे, आज हमने शाम को बाहर घूमने का प्लान किया है।"

निधि खुद नहीं जानती थी, कि ये झूठ उसने क्यों बोला, पर वो कहती भी तो क्या?

कुछ देर तक दोनों तरफ चुप्पी छाई रही, शायद वो सवाल जिनके जवाब निधि आज तक ढूँढ रही थी, वो सवाल खुद में ही जवाब थे, जिनको निधि आज समझी।

कुछ देर की चुप्पी के बाद निधि बोली, "आज मेरी याद कैसे आ गई?"

माधव बोला, "बस यूँ ही, फोन देखते हुए, तुम्हारा नंबर दिख गया तो सोचा, हाल पूछ लूँ। अच्छा लगा जान के तुम खुश हो। चलो ठीक है रखता हूँ।"

जाने कैसे लेकिन अचानक ही निधि समझ चुकी थी, माधव बस एक छलावा था, जो सपने दिखा कर उसको तोड़ चुका था। वो पहली मुलाकात उसकी भ्रम थी, जो इस ज़िंदगी में कभी मुक्कमल न होनी थी। उसका वो इंतज़ार इस ज़िंदगी में कभी खत्म न होना था। या फिर यूँ कहे, शायद ये उस इंतज़ार का अंत ही तो था।

—गरिमा श्रीवास्तव

किशन कुशवाहा



"इंतज़ार है किसी ख़ास के आने का,
दिल-ओ-दिमाग पे उसके छा जाने का।"

ये फर्फ़ख़ाबाद वाले किशन कुशवाहा हैं। इन्हें लिखने का शौक और जुनून हो या ना हो पर सुकून मिलता है इन्हें जब शब्दों के उन्मुक्त मेल से एक कविता या कहानी का निर्माण होता है। इनकी रचनाएँ कई संकलनों में प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें से कुछ हैं, 'सफर', 'अपनापन', 'मन मेरा', 'रंग', 'ख़त', 'दोस्ती', इत्यादि।

'इंतज़ार'

हर कोई अपनी ज़िंदगी की नाव पर सवार है,
और उसे किसी न किसी का इंतज़ार है।

कोई किनारे पर पहुँचने की उम्मीद लगाए है,
तो कोई बीच मँझधार में जाने को बेक़रार है।

कोई चाह में है एक खास मेहमान के आने की,
कोई राह देखे हैं घर बैठे मेहमान के जाने की।

कोई नये रिश्ते जोड़ने की होड़ में है,
तो कोई टूटते रिश्ते वाले मोड़ पे है।

कोई कामयाबी पाने की आस लगाए बैठा है,
कोई कामयाब हो सब त्यागने के विचार में है।

कोई सब कुछ पा लेने की तरकीबें खोज रहा,
तो कोई बस खुद को पाने के इंतज़ार में है॥

—किशन कुशवाहा

मोहित मधुसूदन



लेखक मोहित मधुसूदन बिहार प्रदेश से आते हैं, शिक्षण एवम् NGO में काम सहित लेखन में भी रुचि रखते हैं। जब भी लिखते हैं आज भी अल्फाजों में बचपन की मासूमियत ढूँढते हैं, यूं तो आज कामकाजी पेशेवर हैं लेकिन जब भी लिखते हैं बस अल्फाजों की जगह ज़ज़बातों को लिखते हैं। रचनाओं में अपने बिहार की सरलता पेश करते हैं और दिल में सारे देश को रखते हैं।

"प्यार की राहें"

प्यार की राहों में क़दमों को आहिस्ते चलाना,
लगे कठिन डगर, प्यार को प्यार से समझाना।

किसी तन्हा रात में यूँ चाँदनी की रौशनी तले,
सर्द हवाएँ, स्वेत संगमरमर सी चमकती आना।

शीतल पवन संग, बालों में लगे फूलों की सुगंध,
थोड़ा अपना जिस्म घोल हवाओं को महकाना।

रुह से अपने फिर जिस्म छूना मेरा इस क़दर,
खुली तकती बाहें मेरी, अपना सर्वस्व बिछाना।

आँखो में काजल संग मेरी ख़्वाहिशें समेटे रख,
होठों के कंपन से मेरे सारे अधूरे अरमां सजाना।

धड़कनों के मिलने से वक़्त ठहर ये जाए हमारा,
खुद को मुझमें उतार कर तुम इस कदर बसाना॥

—मोहित मधुसूदन

निलंजन जाल



"वो कहते हैं परिवेश से हमें सब कुछ मिलता है,
तो उसका ध्याल रखना हमारी ज़िम्मेदारी है।"

इनका नाम निलंजन जाल है। ये ओडीशा के बलांगीर ज़िले के उपरबाहाल गाँव के रहने वाले हैं। इन्होंने बी. कॉम. किया है। 2016 से लिख रहे हैं। ये अप्टिवल हेल्थ सॉल्यूशन प्राइवेट लिमिटेड कंपनी में पिछले दो साल से एक हेल्थ वर्कर के तौर पर काम कर रहे हैं। इन्हें संगीत सुनना बहुत पसंद है। ये अपने भाषा सम्बलपुरी में कविता, गीत भी लिखते हैं। परिवेश के प्रति बहुत ध्यान देते हैं।

'इंतज़ार'

तुम्हारी और कितना इंतज़ार करूँ,
प्यार करता हूँ मैं तुम्हें इतना
एक बार बस लौट आओ तुम के
बता दूँगा मैं तुमको कितना।

और इंतज़ार नहीं होता यार तुम्हारी
ज़ितना रुठोगे तुम मना लूँगा,
चाँद, तारे काहां से लाऊँगा तुम्हारे लिये
प्यार से तुम्हे चाँदनी बना दूँगा।

ये दिल अब तुम्हारे बिना रह नहीं पाता
किसी से कुछ भी कह नहीं पाता,
तुम नहीं होते पास तो अकेला हो जाता
इंतज़ार तुम्हारी सह नहीं पाता।

हो सके तो लौट आना मेरे प्यार के लिये
ये दिल अब भी तुम्हारे इंतज़ार में है,
जब याद करोगे आपने क़रीब पाओगे मुझे
ऐसे मेरे प्यार के किताब में तो है॥

—निलरंजन जाल

नूपुर शर्मा



"खरीद लिया है दर्द मुहब्बत के नाम पर
हर रात इंतज़ारी की किशत भरती हूँ।"

ये हैं नूपुर, नूपुर शर्मा, ये दिल्ली की रहने वाली हैं। इन्होंने हिंदी से एम. ए. किया है और मनोविज्ञान का अध्ययन भी किया है। नृत्य और संगीत (सितार) में भी प्रवीण हैं। किताबें पढ़ना और धूमना इनके विशेष शौक में से है। गीत, कविता, ग़ज़ल, कहानियाँ लिखना और पढ़ना विशेष प्रिय है।

इन्हें ग़ालिब, मीर, बशीर बद्र, साहिर लुधियानवी, गुलज़ार को पढ़ना पसंद है। सादे सरल भाषा में अपनी बात कहना पसंद करती हैं। दिल से जुड़ी बातें, ज़ज़बात, ख़्यालात को क़लम में पिरोना पसंद है।

'सलीब'

ना लौटने वाले का क्यूँ! इंतज़ार नहीं जाता।
जानती हूँ सब फिर भी क्यूँ! करार नहीं आता।

रिसने लगे हैं ज़ख्म नासुर की तरह
दर्द इस दिल का अब, सहा नहीं जाता।

ढूँढती हूँ तुझको चादर की सलवटों में,
क्यूँ, तेरी खुशबू का अहसास नहीं जाता।

खड़ी हूँ, आज भी तेरी राह में,
भूल कर, अपनी मंज़िलों के निशां।

तेरी बेवफ़ाई पर क्यूँ, आज भी यकिन नहीं आता।
चाहती हूँ, लौटना पर क्रदम नहीं उठते।

दिल मेरा, मेरे दिल को क्यूँ नहीं समझाता,
ए काश समझ पाऊँ, मैं क्रिस्मत के इशारे को।

मेरी हाथों की लकीरों में, तेरा नाम नहीं आता
जा, तू लौट ना पुकारूँगी मैं तुझको उम्र भर,

मगर ये वादा, खुद से किया नहीं जाता
जा, तू हैं आज़ाद आज और अभी से

हाल-ए-दिल किसी गर को सुनाया नहीं जाता
है दर्द मेरा, मेरी मुहब्बत और मेरी ही तन्हाई,

JOIN TELEGRAM CHANNEL @EBOOKSIND

सलीब अपना किसी और के कांधे पे रखा नहीं जाता॥

—तूर

पंकज गुप्ता 'हृदय'



"तुम द्वंद करो उस कलयुग से जो सर पे तेरे नाच रहा
ना करने देता काज कोई और विनाश को झांक रहा।"

लेखक पंकज गुप्ता 'हृदय' है। ये बलिया, उत्तरप्रदेश से है। ये व्यवसाय से विद्युत विभाग में अभियंता है। आरंभ से ही इन्हें साहित्य में रुचि है, मगर स्वयं की रचनाओं पर इनकी क्लम पिछले कुछ दो तीन वर्ष से चल रही है। इनकी बहुत सी साहित्यिक रचनाएँ ऑनलाइन वेबपत्रिका (सहित्यकुंज, साहित्यसुधा, हिंदीकुंज) प्रकाशित हो चुकी हैं। इनकी रचनाएँ स्टोरीमिरर, प्रतिलिपि, शब्द इन आदि पर उपलब्ध हैं। वर्तमान में ये एक उपन्यास पर कार्यरत हैं।

"तुम्हारा इंतज़ार"

तुम सोचती थी, बेसब्र हूँ मैं
इंतज़ार मेरे बस की बात नहीं।
तुम जो चली जाओगी छोड़ के,
तुम बिन मैं कभी गुलज़ार नहीं।

मगर ये बात कैसे पहुँचाऊँ तुम तक,
की अब मैं पहले सा बेसब्र नहीं।
करता हूँ, तुम्हारा अब भी इंतज़ार,
और ये इंतज़ार बहार से कम नहीं।

कर रहा हूँ, तब से इंतज़ार,
जब तुम मुझसे बिछड़ी थी।
करता रहूँगा, तब तक इंतज़ार,
जब तक एक झलक तुम्हारी न मिलेगी।

एक आस लगी है, बाई और
एक दिन तुम मिलने आओगी।
देकर अपनी एक झलक,
मेरे इंतज़ार का व्रत तुड़वाओगी।

पतझड़, सावन, बसंत, बहार

ये चारो मौसम बीता चुका हूँ।

अब्द दर अब्द तुम्हारे इंतज़ार में

आधी ज़िंदगी गुज़ार चुका हूँ।

अब कब आओगी ये ख़बर नहीं,

मेरे प्राण को अब सब्र नहीं।

ये मौन अस्तित्व जाग उठा है,

आखिरी सांस को मेरे ललकार चुका है।

अगर बीच राह में हो तो तुम ठहर जाना,

तुम्हारा तोहीन होते मैं देख सकता नहीं।

सुना है, हृदय ने कहा मेरे मन से की,

अब मेरे इंतज़ार को तुम्हारी ज़रूरत नहीं॥

—पंकज गुप्ता 'हृदय'

पारुल पाटीदार



"आज नहीं तो कल, मैं कुछ न कुछ बन ही जाऊँगी
तब तलक तुम मेरे साथ, यूँ ही हाथों में हाथ डाले चलते रहना"

पारुल पाटीदार, झीलों की नगरी, उदयपुर, राजस्थान की मूल निवासी है। लेखन से इनका नाम बहुत पुराना है। ये अपने जड़बातों को खाली वक्त में पन्नों पर उकेर देती है। लिखना इनकी ज़िन्दगी का एक अहम हिस्सा है। लेखन इनके लिए इश्क, जुनून और सुकून है। ये कई संकलन का हिस्सा भी बन चुकी है। आगे भी इसी तरह लिखते रहना चाहती है और अपने लेखन को एक नये मुकाम पर ले जाना चाहती है।

"तेरा इंतज़ार अब भी है"

खुदा से माँगी इक दुआ मुक्कम्मल होना बाकी अब भी है,
मुझे तेरे वापस आने का इंतज़ार अब भी है,
चाहती हूँ तेरा होना, तेरी बाँहों में हर रोज बिखरना,
पर तेरे दिए हर ग्रन्थ को भूलना बाकी अब भी है,
तेरा इंतज़ार अब भी है।

हर वक्त बेवक्त सिर्फ तुझे ही सोचती हूँ,
इसलिए इस बात पर खुद से ही लड़ती हूँ,
क्यूँ भूल नहीं पाती तुझे, क्यों खुद में तुझे समाए जाती हूँ,
इस बात का जवाब मिलना बाकी अब भी है, तेरा इंतज़ार अब भी है।

दिल तुझे अपना बनाना भी चाहता है, और नहीं भी बनाना चाहता है,
इस दिल को तुझसे शिकायतें हज़ार आज भी है,
नहीं माफ़ करना चाहता है, ये दिल अब तुझे,
पर इसकी मंज़िल तो सिर्फ़ तू ही है, तेरा इंतज़ार अब भी है।

माना हमें रु-ब-रु हुए बरसों बीत गए,
देखा था तुझे जब, वो आखिरी मुलाक़ात याद आज भी है,
क्योंकि तेरे दिल से जुड़े मेरे दिल के तार अब तलक है,
शायद इस दर्द का एहसास बाकी आज भी है, तेरा इंतज़ार अब भी है।

सुकून मिलता था जो तेरा मेरे क़रीब आ जाने से,
वो ज़ज़बातों का एहसास आज भी वही है,

बहुत कुछ खोया है सनम, बस तुझे इक पाने की चाहत में,
मेरी इस बर्बादी का ज़िम्मेदार तू आज भी है, तेरा इंतज़ार अब भी है।

बार-बार तेरी दी हुई यादों की किताब के पन्ने पलटती हूँ,
वो तेरा दिया हुआ सुर्ख लाल गुलाब मेरे पास आज भी है,
दिल करता है तू भागा आए उस दिन जैसे, और लगा ले मुझे गले,
तेरी बाँहों में जन्मत का एहसास आज भी है, तेरा इंतज़ार अब भी है।

ये पुरवाई है या मेरी जुल्फें आज भी यूँ ही बिखर जाती है,
शायद इनको भी तेरी उंगलियों से सवरने का इंतज़ार आज भी है,
महक जाती थी साँसें मेरी, जब तू नाम मेरा लिया करता था,
ये मेरे कान तेरी आवाज़ सुनने को बेक़रार आज भी है, तेरा इंतज़ार अब भी है।

वो गलियाँ, जिन्होंने समेटा है, कई कदमों के निशानों को,
वो याद करती है तुमको, की बातें हज़ार आज भी बाकी है,
तेरा वो बेख्याली में, सबके सामने मेरा नाम ले जाना,
और घबरा कर बात को पलट देना याद आज भी है, तेरा इंतज़ार अब भी है।

वो तेरा बोलते बोलते, मेरी जुल्फों से खेल जाना,
और बातों बातों में शिकायतें हर बार कर जाना याद है मुझे,
हाथों में हाथ डाले जीने मरने की कसमें, जो खाई थी ना तुमने,
उन कसमों, वादों से तुम्हारा यूँ मुकर जाना अब भी बाकी है, तेरा इंतज़ार अब भी है।

ये जो तुम आँखों ही आँखों में बातें कर लेते हो ना,
मैंने देखा है इन आँखों में प्यार अब भी बाकी है,
दिल कहता है, तुम अब भी मुझे चाहते हो,

इस दिल को तोड़ना तुम्हारा अब भी बाकी है, तेरा इंतज़ार अब भी है।

क्यों भूल जाऊँ तुझे, क्यों तुझे इश्क़ ना करूँ,
ये सवाल मेरे जहन में नासूर सा अब भी बाकी है,
मालूम है तेरे सीने में अब भी, इश्क़ की चिंगारी सुलग रही है,
आ जा अब तो तू लौट कर, कि इश्क़ की बरसात बाकी है, तेरा इंतज़ार अब भी है।

—पारुल पाटीदार

पायल गाडवे



“इंतज़ार की मेफिल हैं बस यादों से भरी
लेकिन इंतज़ार के बिना मोहब्बत की पीड़ा ही नहीं।”

इनका नाम पायल गाडवे हैं। ये पुणे की रहने वालीं हैं। इन्होंने एक बार जब एक कविता लिखी थी तब वो कविता सभी को पसंद आई थी और तब इन्हें पता चला था कि ये कुछ लिख भी सकती हैं। तब से इन्होंने लिखने की शुरुआत की। इन्हें प्यार, प्रेरणादायक और भावनाओं पर लिखना ज्यादा अच्छा लगता है। ये अपनी भावनाओं को बोलने से ज्यादा लिखकर व्यक्त कर पाती हैं। ये अभी दसवीं कक्षा में पढ़ती हैं।

"इंतज़ार में भी मोहब्बत बहुत हैं आपसे"

इंतज़ार में डूबे हैं हम तुम्हारे,

कब मिलने आओगे हमें?

या कब हमें मिलने बुलाओगे?

उत्सूक नहीं हो क्या हमसे मिलने के लिए?

हम तो रोज़ इंतज़ार में हैं, आपसे मिलने के लिए

आँखें तरस रही हैं आपको देखने के लिए

कब तक उनसे आँसू बहाती रहूँ मैं,

दिल बेकरार हैं आपसे मिलने के लिए

कब तक उसे समझाती रहूँ मैं,

लबों पर आ रहा हैं बस नाम आपका

कब तक उन लफ़ज़ों को रुकवाकर रखूँ मैं,

कैसे इन्हें एतबार करवा दूँ मैं

की इंतज़ार ख़त्म होगा इक दिन

हो जायेगी मुलाक़ात आपसे।

इतने आरसो तक कर लिया इंतज़ार हमने,

अब तो आ जाओ ना हमसे मुलाक़ात करने।

हर वक्त दीदार करते हैं सनम, आपका,

फना हो गए हम आपके प्यार के इस इंतज़ार में,

मर मिटेंगे हम आप पर जब मिलोगे हमसे,

जी उठेंगे हम उस क्षण की मुलाकात में,

मुलाकात होने पर डूब जायेंगे हम आपके प्यार में,

इतने अरसों की प्यास बुझा देंगे हम आपकी।

मत करवाओ हमसे अब और इंतज़ार,

नहीं सही जाती हमसे ये घड़ियाँ इंतज़ार की।

आशा हैं हमारी की मिलने आओगे आप हमसे,

क्योंकि इस इंतज़ार में भी मोहब्बत बहुत हैं आपसे॥

—पायल गाडवे

प्राची अग्रवाल



"अधूरे ख़्वाब की ये दास्तान मेरी कुछ,
ऐसे हैं जो बयाँ मेरे शब्दों में वैसे हैं।"

लेखन इनका जुनून और खुश रहने का कारण है। इनका नाम प्राची अग्रवाल है। ये बी. टेक. तृतीय वर्ष की छात्रा है। ये लगभग दो वर्ष से लिख रही है। ये कई संकलन में सह लेखिका के रूप में भी प्रकाशित हो चुकी है और बतौर संकलक इन्होंने सफलतापूर्वक 5 संकलन को पूरा किया है। (ख़्वाहिशें, फ्लाइंग ट्रिवाइर्स फ्रीडम, रेनबो-द शेड्स ऑफ लव, इश्क, एहसास प्यार का)। और डिजाइनिंग में शौक रखते हुए अभी ये बतौर ग्राफिक डिजाइनर हमरुह परिवार से जुड़ी हुई हैं।

"इंतज़ार है तुम्हारा"

कब तक तुम यूँ ही इंतज़ार करवाओगे मुझसे
थक गई है मेरी निगाहें तुम्हारी आने की राह देखते-देखते,
तुम्हारे कदमों की आहट का इन कानों को भी इंतज़ार है
आ जाओ तुम अब और इंतज़ार नहीं हो पाएगा मुझसे।

कब तक तुम यूँही इंतज़ार करवाओगे मुझसे
एहसास-ए -प्यार का इंतज़ार अब नहीं होता,
तुम्हारे साथ पल बिताने का सूकून का इंतज़ार
अब और न हो पाएगा मुझसे।

कब तक तुम यूँ ही इंतज़ार करवाओगे मुझसे
कब तक यूँ इंतज़ार भरी आहे भरवाओगे मुझसे,
अब ख्रत्म भी करो ये मेरा इंतज़ार तुम्हारे लिए
और आ जाओ पास मेरे लिए और मिला दो तुम्हें मुझसे।

—प्राची अग्रवाल

प्रमीत सिंह धायल



"क्यों सिर्फ मुझे ही मिला है ग़म, इस प्यार में, आज साँसो ने
छोड़ दिया साथ, पर आँखे खुली रही तेरे इंतज़ार में।"

प्रमीत सिंह धायल हिसार हरियाणा से हैं। इन्होंने बारहवीं तक पढ़ाई की है, ये अभी एक अंतरराष्ट्रीय दर्जे की लॉजिस्टिक कंपनी में ब्रांच मैनेजर के पद पे कार्यरत हैं। इन्हें संगीत सुनना और लिखना बहुत पसंद है।

इनके जीवन की खुशी ही सकारात्मक सोच है और सबकी मदद करना व सबको खुश रहना ही इनकी प्राथमिकता रहती है।

"तेरा इंतज़ार"

तेरे इंतज़ार का ये वक्त, मैं जानता हूँ, मैंने कैसे गुजारा है,
तरसती निशाहों से, तेरे पथ को ना जाने कितना निहारा है।

बेजान से हो गये थे हम, तेरे जाने के बाद,
तुम थे बहुत रुसवा, नहीं मानें मेरे मनाने के बाद।

नहीं पता तुमको, तेरी मोहब्बत ने दिल को कितने दर्द से गुजारा है,
बहुत संभाला है इस दिल को, तब जाकर सवारा है।

तेरे इंतज़ार में ये आँखे, सुन्न सी हो गई थी,
नहीं चलती थी नब्ज मेरी, धड़कन भी गुम सी हो गई थी।

ना जाने क्यों बेवजह हम रोने लग जाते थे,
संतुलन अपना ही हम, खोने लग जाते थे।

रातों को उठ उठ कर, तुमको पुकारा है,
कभी चाँद तो कभी तारों में निहारा है।

पूछने लगा था ये दिल, और कितना तड़फायेगा,
उस बेवफा के लिए, कितने आँशु बहायेगा।

नहीं आएगी वो लौटकर, अब वो चली गई है,
जहाँ से लौटा नहीं कोई, वो उस गली गई है।

अब आदत डाल लें, हँसकर ग़म को पीने की,

JOIN TELEGRAM CHANNEL @EBOOKSIND

झुपा दर्द दिल में, तू वजह बन किसी के जीने की।

—प्रमीत सिंह धायल

प्रयास तामाड़



"भीड़ है और बिक रहे हैं बाज़ार में काग़ज के फूल हज़ार,
मुझे तो मेरे ही घर की बाग में गुलाब के खिलने का है इंतज़ार।"

ये दार्जीलिंग जिले के रहने वाले हैं, जो भारत के पश्चिम बंगाल राज्य में हैं। इनका नाम प्रयास तामाड़ है। ये असिस्टेंट लाइब्रेरियन का काम करते हैं, रविन्द्र भारती यूनिवर्सिटी, कोलकाता में। इनको साहित्य से प्रेरणा मिलती है, जीने के लिए। प्रकृति से प्रेरणा मिलता है इनको लिखने के लिए।

"ये जो इन्तज़ार है"

इन्तजार की परिभाषा ऐसे बदला है कि,
जैसे की घड़ी की सुई चल रही है,
जो हर टिक-टिक में कुछ ना कुछ बदल रहा है।
बारिश हुई जोर से तो
सुरज को गगन में देखने का इंतज़ार
और गर्मी के मौसम सताता रहा तो
बादल और बारिश का इंतज़ार।

बचपन में बड़े होने का इंतज़ार
बड़े हो गए तो नौकरी और खुद का घर संसार.
बसाने का इंतज़ार।
हो गया घर परिवार ठीक
तो अब रिटायर होने का इंतज़ार
और फिर पेंशन का इंतज़ार।

ये इंतज़ार का सिलसिला तो
जैसे क्रृतु का बदलना
ये कृष्ण चक्र जैसा
जो चक्रभ्यू में चले।

कुछ लिखना बैठ लूँ तो,

शब्द को दिल में आने का इंतज़ार,
और फिर किताबों में छप जाने का इंतज़ार।

ये इंतज़ार का सिलसिला तो

थमेंगा नहीं,

न चाहते, न चाहते हुए भी,

एक निश्चित इंतज़ार

ये दुनिया छोड़ जाना है

जो तय है ये इंतज़ार॥

—©प्रयास तामाङ

प्रिया कुमारी



“याद मुझे वो पहली मुलाकात आँखों की
वो बात याद मुझे वो पहली मुलाकात।”

ये प्रिया कुमारी हैं। जो बिहार की रहने वाली हैं और अपने सपनों को जीना चाहता हैं वो भी अपने शर्तों पर। ज़िंदगी की उदार विचारों में कुछ ख़्याल पीछे रह जाते हैं बस हमें उसे पकड़ कर रखना होता हैं और वक्त पर उसे पूरा करना होता हैं। ये इनकी पहली कविता आई जानते हैं प्रिया को।

“पहली मुलाकात”

याद है मुझे वो पहली मुलाकात
जैसे हो बरसात की कोई बात,
वो तेरा धीरे से मुस्कुराना
मुझे देख कर यूँ नज़रे चुराना,
पर मुझे देख कर यूँ अनदेखा कर जाना।

याद है मुझे वो तेरा क़रीब आना,
फिर मुझे धीरे से ये कह
क्यूँ करते हो मुझे इतना प्यार
हर लम्हा क्यूँ करते हो मेरा ही इंतज़ार।

और फिर मेरा ये कह जाना
ज़िंदगी से अपने करता हूँ मैं प्यार
इस लिए करती हूँ हर लम्हा तेरा ही इंतज़ार
याद है मुझे वो पहली मुलाकात॥

—प्रिया कुमारी

"मुझे तेरा इंतज़ार अब भी है"

वो तेरा पहली बार मुझे देखना
याद मुझे अब भी हैं
तेरा इंतज़ार मुझे अब भी हैं।

वो खिड़की के पास बैठे
रात भर मेरा इंतज़ार करना
बस एक बार छत पर आने को कहना
याद मुझे अब भी हैं
तेरा इंतज़ार मुझे अब भी हैं।

नहीं रखता अब कोई ध्यान मेरा
समय पर तुम खाती नहीं कह कर
तेरा गुस्सा करना याद मुझे अब भी हैं
मुझे तेरा इंतज़ार अब भी हैं।

मेरे रूठ जाने पर तेरा गाना सुना कर
मुझे मनाना याद मुझे अब भी हैं
मुझे तेरा इंतज़ार अब भी हैं
मुझे तेरा इंतज़ार अब भी हैं।

वो एग्जाम के टाइम मुझसे मिलना,
आना संग अपने गुलाब और
मेरी फेवरेट चॉकलेट लाना
याद मुझे अब भी हैं,

तेरा इंतज़ार मुझे अब भी हैं।

वो मुझे बारिश में भीगते हुए
तेरा छुप-छुप कर देखना
मेरी निगाहें मिलते ही तेरा पलकें झुकाना
याद मुझे अब भी हैं
मुझे तेरा इंतज़ार अब भी हैं।

मेरा फ़ोन नहीं उठने पर वो फ़िक्र करना
फिर फ़ोन करते सुबह से कहा थी
कह कर मुझे डॉट लगाना
याद मुझे अब भी है
मुझे तेरा इंतज़ार अब भी है।

एक मोड़ ऐसा आया ज़िंदगी में
फिर गयी निगाहें और बदल गयी राहें
फिर न कभी बात हुई न मुलाक़ात
वो आखिरी मुलाक़ात याद मुझे अब भी हैं
तेरा इंतज़ार मुझे अब भी हैं।

तेरा इंतज़ार मुझे अब भी हैं।

—प्रिया कुमारी

‘इंतज़ार’

याद है मुझे जब वो दिन जब
हम फेसबुक पर दोस्त बने
दोस्ती से सुरु ये रिश्ता
ना जाने कब प्यार में बदल गया।

घंटो बाते करने के बाद भी
बातें ख़त्म नहीं होती थी
ना जाने कहा गई वो राते
ना जाने कहा गयी वो बातें।

पूरी रात सफ़र कर
मुझसे मिलने आना तुम्हारा,
फिर इतना सारा
समय मेरे साथ बीतना।

अब हम साथ हैं
पर वो बात नहीं है,
एक ही कमरे में है
पर वो ज़बात नहीं है।

काश! हम फिर दूर हो जाये

पहले जैसे फिर बात हो जाए,
पास होकर दूर होने से अच्छा
हम फिर दूर हो कर पास हो जाए।

जहाँ प्यार हो बेशुमार और
मिलने का हो बेक़रार,
सिर्फ़ हो एक दुसरे का इंतज़ार
और बस इंतज़ार॥

—प्रिया कुमारी

प्रियंका मिश्रा



"दिल के कोने में हर ज़ज़बात संभाला तेरा है,
जुबाँ पर नहीं लाती पर हर पल इंतज़ार तेरा है।"

प्रियंका मिश्रा जिन्हें हमरूह पब्लिकेशन हाउस के माध्यम से किताब में एक पहचान मिली। हमरूह से जुड़ने के बाद किताबें ही इनकी सच्ची साथी हैं। इन्होंने दो साल पहले से लेखन आरम्भ किया है और ये महादेव को अपना आराध्य मानती है। इन्हें कविताओं और शायरी का बहुत शौक़ था। इनकी कविताएँ पैंतीस संकलन में प्रकाशित हो चुकी हैं। और ये खुद की भी अपनी कसूर तथा आखिरी मोहब्बत नामक संकलन कर चुकी हैं।

'इंतज़ार'

इंतज़ार किसका करूँ कोई आये तो सही,
तालुकात बिगड़ गए वो बताए तो सही।

तरसी निशाह में वो अक्स नज़र आता है,
ये खबर उन्हें कोई बताए तो सही।

डायरी के पन्नों में कुछ ग़ज़ल अधूरी है,
उन ग़ज़लों का अंतरा लिखना है वो बताए तो सही।

इंतज़ार है मुझे हर उस पल का जो साथ बिताया है,
मैं अब तक उस एहसास में जी रही उन्हें कोई बताए तो सही।

तकलीफ होती है गर जब अपना कोई साथ छोड़ देता है,
मैं आज भी उसके इंतज़ार में हूँ उन्हें कोई बताए तो सही।

मोहब्बत करने वालो की एक अलग दुनिया बसती है,
वो अब तलक इस दिल में महफूज़ है उन्हें कोई बताए तो सही।

नुमाईश की थी कभी तेरे इँक की मैंने कुछ इस कदर,
की आज अकेली तड़प रही हूँ उन्हें कोई बताए तो सही।

यादों पे पड़ी धुल को कोई हटाए तो सही,
बेवकूत जो वो याद आते हैं उन्हें कोई बताए तो सही॥

—प्रियंका मिश्रा

पूजा पांडे



"कुछ ख्वाहीशें आज भी गुमनाम होकर जिंदा हैं,
बेताब उन्हें पाने को मेरे मन का परिंदा है।"

पूजा पांडे एक लेखिका और कलाकार हैं। इनका निवास स्थान रीवा, (मध्य प्रदेश) में स्थित है। ये पाठक के जीवन को एक अर्थ में जोड़ने के इरादे से जीवन, अनुभवों और सकारात्मकता पर कविताएँ लिखती है। रेनबो, मर्दसे डे, लाल जैसी किताबों में ये सह-लेखिका रही है।

"तुम्हारा इंतज़ार"

वो शाम होते ही खिड़की से करती हूँ तुम्हारा इंतज़ार,
फुरसत कम मिलती है अब फिर भी करती हूँ तुमसे ही प्यार।

दिखा नहीं पाती हूँ तुम्हें वो बेचैनी जो तुम्हारे देर से घर
आने पर होती है हर बार,

सजती हूँ, सँवरती हूँ तुम्हारे लिये,
श्रृंगार तुम्हें दिखाने के लिये रहती हूँ बेकरार।

माना की बच्चों के पीछे भागती रहती हूँ मैं पूरा दिन,
पर शाम को तुम्हारे लिये क्या ख़ास करूँ सोचती हूँ दिन रात।

उम्र बढ़ी है पर मेरी व्याकुलता अब तक नयी नवेली दुल्हन जैसी है।
तुम्हारा इंतज़ार करना दरवाज़े पर लगता मुझे सबसे ज़रूरी है।

अनगिनत इच्छाओं को हृदय में लिये तुम्हारी राह ताकती हूँ
कभी तुम्हारा वक्त मेरा होगा सोचकर मन ही मन खुश हो जाती हूँ।

सच कहूँ तो हमारे घर की खुशियों की पोटली तुमसे ही तो भरी रहती है।
कह नहीं पाती तुमसे पर हमारे घर की रौनक तुम से ही रहती है।

वो शाम होते ही खिड़की से करती हूँ तुम्हारा इंतज़ार।
फुरसत कम मिलती है अब फिर भी करती हूँ तुमसे ही प्यार॥

—पूजा पाण्डेय

ऋचा सिंह "सोमवंशी"



"कह कर गये थे तुम लौट आने को कभी,
आ कर देख लो उसी रास्ते में ठहरी हूँ अभी।"

ये हैं, भोलेनाथ की आराध्या ऋचा सिंह "सोमवंशी", ये उत्तरप्रदेश से हैं। ये स्वभाव से मस्त और जीवन को पूर्ण रूप से जीने में विश्वास करती है। ये बिना शर्त स्वीकृति और कृतज्ञता में दृढ़ता से विश्वास रखती हैं और अपने जीवन में अनुसरण करती हैं।

"इंतज़ार-यादों का शहर"

मैंने वो मुस्कुराते लम्हे थाम रखे हैं,
कुछ जेहन में कुछ तस्वीरों में समा रखे हैं।

कभी दोपहरी तस्वीरों संग गुजरती है,
कभी रात मेरी यादों को टटोलती है।

अक्सर बिन बारिश आँखें नम हो जाती हैं,
याद कर लूँ वो लम्हें बेचैनी कम हो जाती है।

तुम भी आना कभी मेरे यादों के शहर में,
कुछ तस्वीर तुम्हारी भी बच्ची है दिल में,

अब सोचोगे तुम, यहाँ तुम्हारा क्या बाकी है,
बदल गया है वक्त ये माना, वो इंतज़ार मेरा बाकी है।

—ऋचा सिंह "सोमवंशी"

रोहित टोप्पो



"ना सोचा था दिल ने कभी ऐसा,
पाकर तुम्हे, ये ऐसा मुस्कुराएगा।"

इनका नाम रोहित टोप्पो है। ये राँची के रहने वाले हैं। फिलहाल ये अपनी इंटर की पढ़ाई कर है। बचपन से ही इन्हें लिखने का शौक था, मगर इन्हें इसका एहसास नहीं था। मैट्रिक के बाद इनकी दीदी (shivani) ने इनकी इस खूबी को पहचाना और उन्होंने इन्हें कविताएँ लिखने की प्रेरणा दी, और इसके बाद इन्होंने श्रृंखलाओं में लिखना शुरू किया। अपनी दीदी की कविताएँ सुन कर, इन्होंने भी अपने ज़बातों को छुपाकर रखने के बजाए उन्हें रचनाओं में ढलना सीख लिया। दिल की अनसुनी बातों को अपनी रचनाओं में बाया करने से इन्हें बहुत खुशी मिलती है।

"इस क़दर हुआ तुम्हारे साथ का असर"

ऐसा किसी ने बदला मुझे, पल की खबर ना होने दी,
मायूस रहता था मैं, मुस्कुराना मुझे सिखाया।
इस क़दर हुआ तुम्हारे साथ का असर।

होता था जो, खुद में खोया हुआ,
सोचा था किसने, यूँ मुस्कुराएगा वो साथ सबके।
बातें करने को, डरता था हमेशा जो,
चाहता है अब, करे यूँ ही तुमसे बातें।

इस क़दर होगा तुम्हारे साथ का असर,
थी ना कभी इस दिल को खबरा।
सोचा था किसने इस कदर बदल जाऊँगा मैं,
डरता था दिल, हरपल करने को जिन्हें
पता था किसे, फिर से कर जाऊँगा उन्हें मैं।

इस क़दर हुआ तुम्हारे साथ का असर।
किसी को खोने का डर, होता है क्या??
जिसने ना कभी जाना था,
तुम्हें खोने का डर, ऐसे इस क़दर यूँ सताएगा।
इस क़दर हुआ तुम्हारे साथ का असर,
पाकर साथ तुम्हारा, मुस्कुराना मैंने है सीखा।

—रोहित टोप्पो

संगीता त्रिपाठी



"इन आँखों का इंतज़ार ही बन जाती है बंदगी,
गर कोई उम्मीद न रहे तो थम जाती है ज़िंदगी।"

ये हैं संगीता त्रिपाठी जो मुंबई से हैं। ये पंद्रह से ज्यादा ऐंथोलॉजी में काम कर चुकी हैं, जिसमें माँ, सफर, कसूर, रंग जैसे ऐंथोलॉजी भी शामिल हैं। इन्होंने 'कैंसर' नामक के ऐंथोलॉजी का संकलन भी किया है। अपने दिल की आवाज़ को ही ये शब्दों में ढालना पसंद करती हैं।

'इंतज़ार'

इंतज़ार इन आँखों को रुला रहे हैं,
इल्ज़ाम ज़िंदगी पर लगते जा रहे हैं।
हर दिल को ही है, किसी का इंतज़ार,
कोई तो समझे ये चाहत, ये इक़रार।

सुबह हो जाए तो शाम का इंतज़ार,
रात को नींद आती नहीं तो बेकरार,
ज़िंदगी के पल हम गिनते जा रहे हैं
दर्द में भी यहाँ लाखों मुस्कुरा रहे हैं।

उड़ते पक्षियों को आसमान चाहिए
बरसती बूँदों को ज़मीं की तलाश है,
किसी को नाम, किसी को काम चाहिए,
किसी को बस चाहिए अपनों का साथ है।

किसी पर कोई सब कुछ लुटाना चाहता है,
कोई लूट कर किसी को भाग जाना चाहता है,
किसी को बस अपनी अस्मत से प्यार है,
किसी को क़िस्मत संवरने का इंतज़ार है।

इन आँखों के इंतज़ार को न कर रुसवा
गर है, प्यार सच्चा तो मिटा तू हर शिकवा,
हर किसी का इश्क यहीं मुकम्मल हो जाए,

JOIN TELEGRAM CHANNEL @EBOOKSIND

गर इंतज़ार हो सच्चा तो मंज़िल मिल जाए॥

—संगीता त्रिपाठी

सावन यादव



ये सावन यादव हैं। ये बिहार के रहने वाले हैं। ये अपने सपनों को खुलकर जीना चाहते हैं वो भी अपने शर्तों पर। ज़िंदगी की सभी बातों का जवाब ये खुद से देना चाहते हैं। ये ख़त, माँ जैसे एँथोलोजी में भी आ चुके हैं।

"मुझे इंतज़ार रहेगा तेरा"

मेरी बाहों में तेरी जन्मत,
तेरी जुल्फों में मेरी शाम हुई थी।
प्यार के लम्बे इंतज़ार के बाद,
एक शाम तुमसे मेरी मुलाक़ात हुई थी।

मुझे इंतज़ार रहेगा तेरा,
जैसे बादल भी रुका हो बरसात के लिये।
मुझे इंतज़ार रहेगा तेरा,
किसी तपते दिन कि ठंडी शाम कि तरह।

किसी सर्द रात में
राहत देती धीमी आँच कि तरह।
मुझे इंतज़ार रहेगा तेरा,
किसी मुरादि कि पाँच वक्त कि अज्ञान कि तरह।

मीरा कि यादों में श्याम कि तरह और पहली बरसात में
तेरे चेहरे पर आती मुस्कान कि तरह।

मैं फिर मिलूँगा तुझसे
लेकिन मिलूँगा अंजान बनकर,
बिल्कुल हमारी पहली मुलाक़ात कि तरह।

गुज़र जाऊँगा तेरी जुल्फों को छू कर

हवा कि तरह, या फिर उतर
जाऊँगा तेरी नज़रों में किसी
मुसाफ़िर के मुक्काम की तरह।

तेरे हाथो कि लकीरों को छू
कर उनसे जुड़ जाऊँगा,
या मैं भी टेहर जाऊँगा
तेरे होंठो पर मेरे इस नाम कि तरह।

मैं तेरा इंतज़ार करूँगा,
एक तन्हा शाम कि तरह॥

—सावन यादव

श्रुति



"बुरे वक्त का भी वक्त जरूर खत्म होता है,
बस उस अच्छे वक्त का इंतज़ार करना है।"

श्रुति, एक छात्र है, जो बठिंडा, पंजाब की रहने वाली है। ये अपनी भावनाओं को क़लमबद्ध कर उन्हें कविता का रूप देने की कोशिश करती है।

ये खुद से ज्यादा दूसरों के भावों को अहमियत देकर, उन्हें शब्दों में बांध कर, कविता का रूप देने की कोशिश करती है। ये ज़िंदगी में प्यार की अहमियत, किसी के दिल टूटने का एहसास, किसी से मोहब्बत होने का एहसास जैसे विषयों पर लिखना पसंद करती है। ये इस कथन में विश्वास रखती है, “भावनाओं को कविताओं में बदलना।”

"थोड़ा सा इंतज़ार"

सब बिगड़ती बातों का बस,
एक ही समाधान है,
बस थोड़ा इंतज़ार करना है।
हर तूफानी शाम के बाद,
खूबसूरत बारिश भी आती,
जो आपके साथ सुकून लेके आती है,
बस उस बारिश का इंतज़ार करना है।

हर हार के बाद,
हार नाकामयाबी के बाद,
एक कामयाब जीत भी आती है,
जो अपने साथ खुशियाँ लेके आती है,
बस उस जीत का इंतज़ार करना है।

हर नाउम्मीद अंधेरी रात के बाद,
एक नया दिन आता है,
जो अपने साथ उम्मीद की किरणे लेके आता है,
बस उस नए दिन का इंतज़ार करना है।
बस थोड़ा सा इंतज़ार करना है।

—श्रुति

स्मितेष शाह (जैन)



"चाहत तो तुम मेरी ही हो बस इन्तज़ार में बैठा हूँ।
तू दिल का दरवाज़ा खोल मैं चौखट पे बैठा हूँ।"

इनका नाम स्मितेष शाह (जैन) हैं। ये व्यारा, गुजरात से हैं। ये एक व्यापारी हैं और पिछले 21 साल से ये लिख रहे शब्दों से खेलना और सही तूरीके से ढालना अच्छे से आता हैं। इनका कहना है, ज्यादातर ये खुद के अनुभव पर जो महसूस करते हैं उस पर ही लिखा करते हैं। और कई लेखकों को पढ़ कर प्रेरणा लेते हैं, संगीत सुनने में और नृत्य में इनको रुची हैं। और हमरूह परिवार से जुड़े हैं द लॉग सायलेन्स, पिता, पूचकार, दूरी, किस्सा, समय, मुलाकात, फ़ना, गुफ्तगू।

"मेरी इच्छा है, तुझे घर लेके आऊँ"

अपने घर की शोभा तुझसे और बढ़ाऊँ।
कोई कमी तुझे ना हो यही भावना मैं भाऊँ।
तू मेरे घर को स्वर्ग बनाए यही मैं चाहूँ।
मेरी इच्छा है तुझे घर लेके आऊँ।

तुझे हर पल हर घड़ी खुश ही देखता रहूँ।
तेरे पैरों की पायल कि गूंज सुनता जाऊँ।
हातो में तुझे तरह-तरह की चुड़िया पहेनाऊँ।
मेरी इच्छा है तुझे घर लेके आऊँ।

सेवा तू मेरी करे और नज़र मैं उतारता जाऊँ।
चौके में तेरी ही चेहेक पाऊँ।

मै हर एक ब्रास तेरे हाथ से खाऊँ।
मेरी इच्छा है तुझे घर लेके आऊँ।

नए कपडे तुझसे ही पसंद कराऊँ।
कार मैं बैठाकर गाँव पूरा घुमाऊँ।
अपने भगवान के दर्शन को लेकर जाऊँ।
मेरी इच्छा है तुझे घर लेके आऊँ।

तुझे जो पसंद आए वो दिलाऊँ।
तुझे कभी अकेला छोड़ के ना जाऊँ।
जहा जाऊँ साथ लेकर जाऊँ।
मेरी इच्छा है तुझे घर लेके आऊँ।

मै इस घर में अकेला रहे ना जाऊँ।
मेरे साथ सारी ज़िंदगी जिए ये वादा लेता जाऊँ।
अब तो तेरी आँखो से भी हा कहेंल वाऊँ।
मेरी इच्छा है तुझे घर लेके आऊँ।

तू जानती नहीं मैं रात-रात सो न पाऊँ।
तू कहे तो तेरे सपने में भी आ जाऊँ।
पर तेरा साथ कभी ना छोड़ जाऊँ।
मेरी इच्छा है तुझे घर लेके आऊँ।

तू मेरी हो गई ये दिखाकर लोगो के पैरोतले कि ज़मीन हिलाऊँ।
तू मेरे घर आ गई ये बताकर घरवालो को जलाऊँ।
बस तू एक बार हा कर दे तुझे सारि दूनिया घुमाऊँ।
मेरी इच्छा है तुझे घर लेके आऊँ।

—स्मितेष शाह (जैन)

सौरभ विश्वकर्मा



"कि कैसे एक तरफा प्यार में इंसा ज़िंदगी बेकार करता है,
कुछ काम नहीं कर पाता और शिद्धत से इंतज़ार करता है।"

सौरभ विश्वकर्मा बहुत ही उत्कृष्ट लेखक हैं। इन्होंने इस बार आज-कल के इश्क और इंतज़ार को शब्दों में पिरोया है तो पढ़िए और इसका आनंद लीजिए।

"मेरा दिल उसका इंतज़ार करता है"

कि मेरा दिल इस क़दर उसका इंतज़ार करता है,
वो चला जाता है राह बदलकर फिर भी दिल बेकरार करता है।

कि एक मेरा दिल है जो उससे प्यार करता है,
वो है की मुझसे नफ़रत करता है और बेशुमार करता है।

ऐसा नहीं है मैंने कुछ गलत किया हो कभी उसके साथ,
बस मैं सीधा-सादा लड़का हूँ जो उसपे जां निसार करता है।

उसे पसंद है वो लड़का जो धुओं को सर पे सवार करता है,
बाइक है उसके पास भले ही वो किसी से उधार करता है।

मुझे खबर है की वो लॉज गई थी उसके साथ,
दिल है की उसका ज़िक्र बार-बार करता है।

तकलीफ़ होती है तो बंदा शायरी सुन लेता है दर्द भरी,
और खुद के आँसुओं से खुद पर वार करता है।

वो रुकसत हो गई मेरे सामने किसी तीसरे के साथ,
कभी बात नहीं की उसने मुझे ऐसा कौन यार करता है,

चलो जाने दो ये उसकी ही मेहरबानी है जो मैं हूँ,
की #100rav ऐसी महफ़िल बनाता है जैसे कोई फनकार करता है॥

—सौरभ विश्वकर्मा

स्वप्निल हेडाऊँ



“तड़प के देखो किसी की चाहत में,
तो पता चलेगा कि इंतज़ार क्या होता है।”

इनका नाम स्वप्निल हेडाऊँ है। ये हिंगणघाट, जिला वर्धा (महाराष्ट्र) से है। ये वर्तमान में मास कम्युनिकेशन में एम.ए. कर रहे हैं। उनके लिए लेखन एक शाश्वत प्रेम है। इसलिए वह अपनी कल्पना को शब्दों के रूप में काग़ज पर उतारने की कोशिश करते हैं। ये अपने शब्दों को अक्सर उद्धरणों के रूप में लिखता है और कभी-कभी वह कविता और कहानी कथन लिखता है। उनका लक्ष्य कविता और उद्धरणों के रूप में लोगों के प्रति अपने विचार पहुँचाना है। इसलिए ये सह लेखक के रूप में साहित्यिक संग्रह में लेखन का कार्य करते हैं और इन्होंने कई साहित्यिक संग्रह के लिए लेखन किया हुआ है।

'इंतज़ार'

तू मेरा फैसला कर
मेरा हर फैसला गलत था
ये साबित करा।

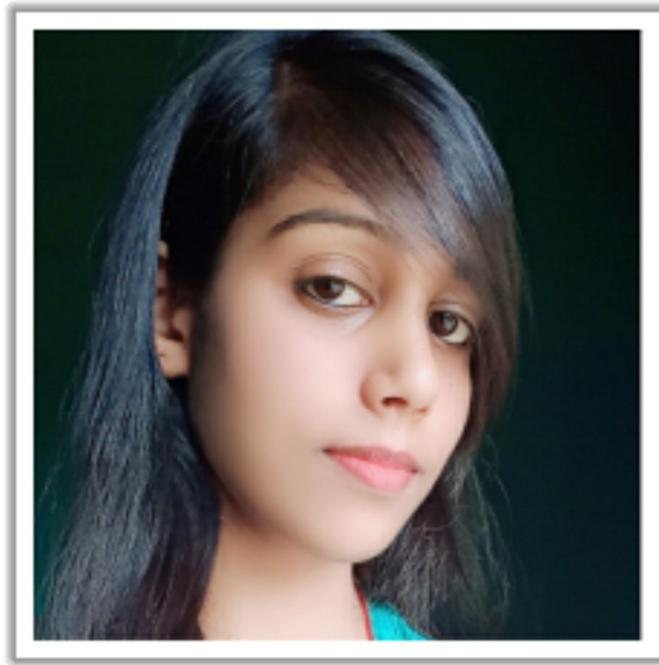
तुम्हे सबसे अलग समझना
शायद भूल थी मेरी,
क्योंकि तुम्हारा इंतज़ार करना
आदत थी मेरी।

भूल कर सारी बातों को
हम तुम्हे अपना लेंगे,
तुम एक बार मिलने का वादा तो करो
हम तुम्हारे इंतज़ार में ही जी लेंगे।

अभी भी कर रहे हैं इंतज़ार
तुम्हारे जवाब का,
तू बस इतना बता दे
की तू मेरा है भी या है किसी और का?

—स्वप्निल हेडाऊँ

तुलिका श्रीवास्तव



"अच्छा लगता है होना तेरे ख्यालों में,
जब-जब जस तेरे आने का।"

तुलिका श्रीवास्तव, जो कि महत्वाकांक्षी, आत्मविश्वासी और साथ ही साथ एक भावुक लेखिका हैं। ये "जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, जयपुर" से "मास्टर इन कंप्यूटर एप्लिकेशन" की हैं। इन्हें अपनी भावनाओं को लेखन द्वारा व्यक्त करना अच्छा लगता है और मूल रूप से ये अपने विचारों और अनुभवों को क़लमबद्ध करती हैं। ये 30 से अधिक संकलनों में सह-लेखिका रह चुकी हैं एवं संकलन "सफर का नाम ज़िंदगी", "दोस्ती-एक अनमोल रिश्ता", "समय-एक अहमियत" एवं "The Long Silence" की संकलक भी।

"इंतज़ार तेरा"

कुछ पल जो तेरे साथ बिताये
उन यादों में जी रही हूँ,

इन लम्हों में भी उस पल को
हर साँसों के साथ जी रही हूँ,

सुनती हूँ आज भी
तेरी-मेरी बातें इन हवाओं से,

सोचती हूँ लिखूँ सिर्फ़
अपने हर नज़्म में तेरे छ्यालों को,

जिक्र करूँ किताबों के
हर पन्नों पर एहसास तेरा,

वो महफिल वो हसीन शाम
हर सहर तेरे नाम करूँ,

अंधेरी रातों की ये चाँदनी
देती अंदेसा तेरे आने का,

इसी छ्यालों में कर रही दीदार तेरा
हूँ, तेरे आने का कर रही हूँ इंतज़ार मैं॥

—तुलिका श्रीवास्तव

विश्वास गोस्वामी



"यूँ तो मिल चुका हूँ हज़ारों बार मैं तुझे, हज़ारों बार तेरा इंतज़ार किया है,
मगर इस बार ये बात कुछ और है, मेरे आखिरी प्यार का पहला इंतज़ार मिला है।"

इनका नाम विश्वास गोस्वामी है। ये अहमदाबाद गुजरात के रहने वाले हैं। ये एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं और अभी इसी क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। इन्हें लिखने के साथ-साथ फोटोग्राफी, ट्रैवलिंग किताबें पढ़ना और संगीत सुनने का शैक्षणिक है।

‘इंतज़ार’

कभी रास्ते में मिलो तो अपनी दास्तां सुनायेंगे तुम्हें,
तुम नींद से जागो तो सही, कुछ ख़वाब दिखायेंगे तुम्हें।

कभी भीड़मे तन्हा महसूस करो तो कहना,
महफ़िल-ए-अल्फ़ाज़ में ले जाएगे तुम्हें।

तुम्हें क्या पता मेरी इस मुस्कान की कहानी,
बैठो, अपने हिस्से की हक्कीकत बतायेंगे तुमहे।

सुना है तुम भटक गए हो रास्ता अपने ही घर का,
तूम कहो तो दरवाजे तक ले आयेंगे तुम्हें।

तुम्हारी वापसी का रास्ता खुला है आज भी,
तुम आओ तो बनाकर चाई पिलायेंगे तुम्हें॥

—रुद्र

JOIN TELEGRAM CHANNEL @EBOOKSIND

English Write-ups

B. Sai Sri Harshita



Ms. B. Sai Sri Harshita is a young, dynamic and a passionate writer as well as a quote master. She has finished her master's in Agricultural biotechnology from Andhra University. She is currently working as Subject matter expert-biology in Spi Global (Straive). She has written 150+ poems and quotes and co-authored 60+ anthologies.

Throwing light on emotions, ethics and values is the main theme of her poems.

“A Long Wait”

She spent years
To find her nears,
And meet her dears,

She spent years with mind of queries,
To build heart of memories,
And create a life with beautiful galleries,

She spent years writing beautiful dairies,
With full of amazing stories,
She failed to complete the story,
Because of a missing glory,

She realised the missing glory is her mate,
She decided to search her fate,
She then set her feelings to liberate,
And finally reached her soulmate.

—B. Sai Sri Harshita

Bharathi



Her name is Bharathi. She is from Kallakurichi (Tamil Nadu). She has completed D.ted MA English, D.T.P, PGDCA. Her passion is writing. She has been a co author of 37 anthologies. In her extra time she is a news reader, IAS aspirant, singer, cook, photo editor, rangoli creator and quotes writer.

"I'm waiting"

The reality of the wait

“Dear I have seen

All the pain of my waiting

To change comfortably in the moments

I see you.”

“Dear, you are gifting tears

To the heart that carries

Your memory.”

“You are soaked in love

I look forward to conquering

The ages for this moment.”

“Every night eager to meet you

Waiting for the dawn.”

“Dear, you

I lose the day trying to forget

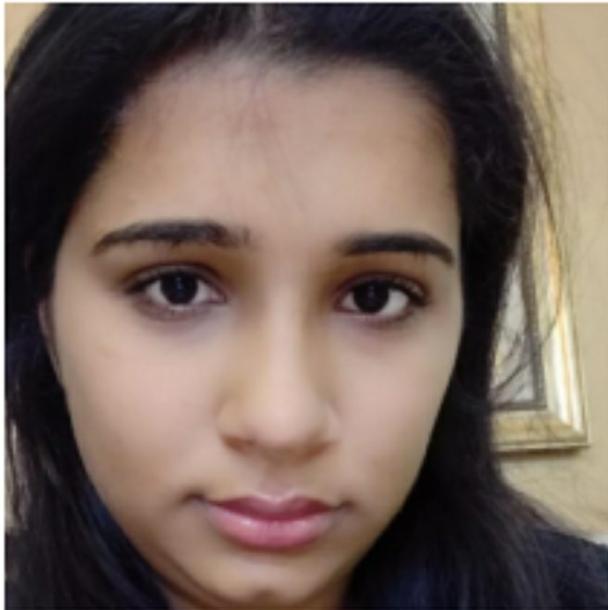
With the expectation that,

You will understand

My love forever, I am waiting.”

—Bharathi

Bhavya Chugh



She is Bhavya Chugh a Law graduate from Banasthali University & has been a passionate writer. She has written on various topics like Laal, Dream, Housemaker, Nari Samman, Cancer, Betiyan and covid 19 and Yoga, shiksha and from heart to pen. She has dedicated her passion towards writing as her career She has been awarded with emerging personality award 2021 and lime light award and indian prime awards 2021

'Intezar'

Dear zindagi,

there are many things which I believe I need them in my life for a long time. These things have been my desire for which I have sacrificed many times even when I had an opportunity. Hope you give me a chance to understand what and how I need things to be in my life.

A chance to travel solo to various places in India

A chance to get along with my father in life

A chance to work for the deprived people in the society

A chance to publish my solo book (kuch ankahe lafz)

A partner in life who supports understand and care for me throughout my journey

A friend who keeps me close to his/her heart as I can share everything with him/her

A chance to become a good business woman

Many reasons to keep my self busy and away from negativity and negative people

A chance to become influential and powerful

A chance to become a travel blogger

A chance to establish my career in law

Thankyou zindagi for making my life so beautiful but these things mentioned above have been an opportunity that I have been waiting for since ages. its been so long that you have not provided me with a single reason to be happy. but I believe that if I have taken birth you will be definitely give me reasons

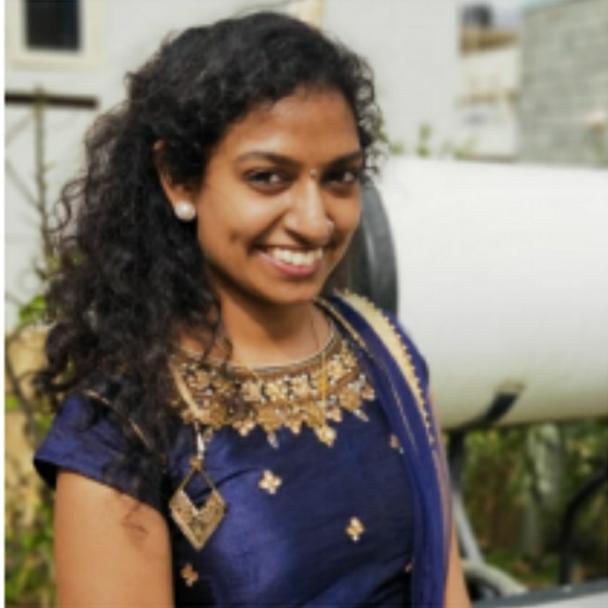
JOIN TELEGRAM CHANNEL @EBOOKSIND

to be happy and satisfied

Love,

—Bhavya

Chaithra Kukkemane



Chaithra Kukkemane is a writer and a blogger who started her journey of writing from an early age. She created her blogs in 2018, intending to use blogging as a platform to express her feelings and experiences through her blogs and quotes. She is also a writer of 'Tiny drops,' a collection of micro-stories. She has co-authored more than two anthologies. Besides, she loves to travel, cook and sing. She is born in Dakshina Kannada, Karnataka but brought up and settled in Bangalore, Karnataka. She graduated with a Bachelor of Commerce from Vijaya College RV road Bangalore. However, she is currently pursuing a professional course. She believes that being true to oneself is the key to understanding oneself.

“I am here”

It started drizzling. She stood there in a gorgeous saree. By her appearance, it appeared that it is a special day for her. Her eyes smeared with dark eyeliner, searching for someone. She was searching every passing car with excitement. As a car approaches her, she uses to become alert hoping that, the care might stop. Her eyes used to shine for a moment, and that shine used to disappear as soon as the car passed.

As time went by, it started raining. She found a place to protect herself from rain. Her big black eyes were like glue to the road. I could feel her restlessness. I wished to approach her and say, “I am here,” but I was a stranger with crazy ideas. So I decided to stay there and watch her in the distance.

Neither rain nor she was ready to give up. I decided to stay too. I was curious to know to whom she was waiting. I could sense her longing to see that specific face. So I stood there like an air. Invisible! She constantly started to check her phone. Now, I could see the disappointment in her eyes. She is on the verge of breaking down. Her tears are ready to flood out.

That was my cue. My wait is over. I slowly started to walk towards her.

—Chaithra Kukkemane

Ritik Kashyap



Ritik Kashyap, from Lucknow UP. He done his post graduation this year. He loves to write and writing is his hobby.

“Passing The evening”

Passing the evening I keep attention
And Waited for one person
As Colors of the sky change
Thinking of mind will be strange.

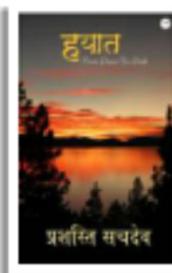
Birds are returning in nest
Sun will have to be now set
Animals are coming to their home
After the whole day Want to rest.

Sitting alone I was thinking about
Waiting n waiting And making doubts
But no sound Come to near me
And no one there to here me .

Time has running so fast
I pause myself at last
Suddenly I get out of my thoughts
I found all around me only dark.

—Ritik Kashyap

Some more interesting books from the collection of Humrooh Publication...



Contact no. 6207124550

JOIN TELEGRAM CHANNEL @EBOOKSIND

Mail: humroohpublicationhouse@gmail.com

Insta: humrooh_publication_house



COLLECTION OF VARIOUS
→ HINDUISM SCRIPTURES
→ HINDU COMICS
→ AYURVEDA
→ MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with

By
Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server!]

JOIN TELEGRAM CHANNEL @EBOOKSIND

Thank You